52nd Year in the Service of Mankind

**Bharat Vikas Parishad**

June, 2016 No. 06 Vol XXXXXV

सृष्टि संवत् : 1,96,08,53,119 शकसंवत् 1938

वैशाख-ज्येष्ठ 2073 दयानन्दाब्द 193 कलि संवत् 5118

नीति Niti

Mouth piece of Bharat Vikas Parishad with a circulation of 55000

**National President**

**SITARAM PAREEK**

**MOB.: 0-9322265975 (MUMBAI)**

**National Vice President (HQ) & Editor**

**DR. SURESH CHANDRA GUPTA**

**MOB : 09415334709 (FARRUKHABAD)**

**National Secretary General**

**AJAY DUTTA**

**MOB. : 09417016915 (CHANDIGARH)**

**National Finance Secretary**

**OM PRAKASH KANOONGO**

**MOB. : 09322295253 (MUMBAI)**

**National Organising Secretary**

**SACHIDANAND PANDA**

**MOB. : 09437506798 (BHUBANESWAR)**

**Chairman Prakashan**

**ATAM DEV**

**RESI : 011-27315696 (DELHI)**

**विशेष : शाखा समाचारों की प्रक्रिया में एक बड़ा परिवर्तन।**

प्रकल्प के अन्तर्गत महत्वपूर्ण, समाज के लिए प्रभावी, समाज परिवर्तन में सक्षम ऐसे समाचारों का प्रकाशन किया जायेगा। अभिनन्दनीय, दुर्लभ, प्रेरक घटनाओं को भी सम्माहित किया जाएगा। शाखा की बैठक, परिवार मिलन, वन विहार आदि सदस्यों के लिए प्रेरक है परन्तु प्रकाशन के लिए न भेजें। मासिक/वार्षिक ब्यौरा 'नीति' का विषय नहीं है। परिषद् के अलावां भी कोई प्रेरक संस्करण या घटना भेज सकते हैं। **सम्पादक**

**Niti e-paper : This issue is also available on Parishad's website www.bvpindia.com**

**Published & Printed by S.K.Wadhwa for BHARAT VIKAS PARISHAD, Bharat Vikas Bhawan, Plot No. MS-14 AD/BD Block, (Adjoining BD-87), Pitampura, Delhi-110034 Editor : S.K.Wadhwa Printed at: BHAWNA PRINTERS, A-26, Naraina Industrial Area, Phase-II, Delhi-110028 Ph.: 9871577322**

कभी भी कामयाबी को दिमाग और नाकामी को दिल में जगह नहीं देनी चाहिए। क्योंकि, कामयाबी दिमाग में घमंड और नाकामी दिल में मायूसी पैदा करती है।

## CONTENTS

| | |
|---|---|
| 1. सम्पादकीय | 4 |
| 2. संगठन के झरोखे से/सूचनाएँ | 5 |
| 3. कार्यशाला | 6 |
| 4. बदलते मौसम में सेहद का कैसे रखे ख्याल | 8 |
| 5. स्वास्थ्य | 9 |
| 6. फिटकरी के औषधीय एवं आयुर्वेदिक गुण | 14 |
| 7. आया मौसम गर्मी, लू..... | 18 |
| 10. विविध गतिविधियाँ | 19 |
| 11. Importance of Guru in Indian Culture | 28 |
| 12. समग्र ग्राम विकास योजना | 31 |
| 13. श्रद्धांजलि | 34 |

**विशेष :**

1. युवाओं में बढ़ता मादक द्रव्य व्यसन : एक ज्वलंत समस्या, पृष्ठ संख्या-12 डॉ. ब्रजेश कुमार सक्सैना
2. हमारे कार्य का वैचारिक अधिष्ठान, पृष्ठ संख्या-32ए डॉ. बजरंगाला गुप्ता

## जून मास के पर्व एवं राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रम

05 : विश्व पर्यावरण दिवस,
06: शिवाजी राज्याभिषेक,
07: महाराणा प्रताप जयन्ती,
28: वीर सावरकर जयन्ती,
11: राम प्रसाद बिस्मल जयन्ती,
14: गंगा दशहरा,
20: कबीर जयन्ती,
21: विश्व योग दिवस,
27: डॉ. सूरज प्रकाश जयन्ती/बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जयन्ती

Central & Regd. Office:
**BHARAT VIKAS BHAWAN**
Behind Power House,
Pitam Pura, Delhi -110034
Ph: 011-27313051, 27316049 Fax: 011-27314515
e-mail : niti@bvpindia.com, bvp@bvpindia.com
website : www.bvpindia.com

**Price : Rs. 10.00 Per Copy**
**Annual Subscription : Rs. 100.00**

# सम्पादकीय...

भारतीय संस्कृति ने सदैव शाश्वत सत्य के आधार पर मानव जीवन के व्यवहार और नियमों के सूत्र प्रस्थापित किये। प्राचीन मनीषियों ने सनातन धर्म की मान्यताओं में समाज में महिलाओं के स्थान के बारे में जिन मूल्यों का प्रतिपादन किया होगा वे उस युग के अनुकूल एवं मान्यताओं के अनुरूप होगी। बदलते परिवेश में समाज के विभिन्न स्रोतों में सांस्कृतिक मान्यताओं के काल वाह्य होने के कारण उनकी मान्यता समाप्त हो गई। इन स्थानों पर नई युगानुकूल व्यवस्थाएँ हर क्षेत्र में धीरे-धीरे स्थापित हो रही है। नारी शक्ति के बारे में प्रचलित रुढ़ मान्यताएँ न केवल चरमरा रही है वरन उनके नये संस्करण भी निर्माण हो रहे हैं। नारी शिक्षा के साथ आज समाज के उन सभी क्षेत्रों में महिलाओं का प्रवेश हो गया है जो पूर्व काल में पुरुषों के लिए आरक्षित रही। शिक्षा, बैंकिंग, व्यापार, तकनीकी, स्वास्थ्य, अनुसंधान, अंतरिक्ष, सेना आदि क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी स्वीकार्यता स्थापित कर ली है।

कुछ समय पूर्व केरल के सबरीमाला एवं महाराष्ट्र के शनि शिंगणापुर मंदिर के गर्भगृह में महिलाओं का प्रवेश चर्चा का विषय रहा। कुछ संघर्ष भी हुआ। अच्छा हुआ मंदिर की समिति ने ही नारी समाज के लिए गर्भगृह के द्वार खोल दिये। चर्चा अब दक्षिण के अन्य मंदिरों में महिलाओं के प्रवेश की है। न्यायालयों ने इस संबंध में अनुकूल रवैया अपना लिया है। यह नारी के मानवाधिकारों का भी एक विचारणीय विषय है। देर सबेर समाज इसकी स्वीकार्यता कर देगा।

रोहित वेमुला की माँ और भाई ने मुम्बई में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। बाबा साहब अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म की रीतियों से क्षुब्ध हो कर जब धर्म परिवर्तन का मन बनाया तो समकालीन नेताओं के सुझाव पर ही उन्होंने भारतीय मूल के बौद्ध धर्म को अपनाया। देश का बहुसंख्य हिन्दू समाज भगवान बुद्ध को अवतार एवं बुद्ध के उपदेशों को दैविक मान्यताओं के रूप में मानता है। बौद्ध ध र्म अपनाने से राष्ट्र निष्ठा को आंच नहीं आती। असहिष्णुता, वैचारिक द्वेष, अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर चला संघर्ष भविष्य में भी राष्ट्र निष्ठा से जुड़ा रहेगा। यह बाबा साहब का भारत को अमूल्य योगदान है।

वैश्विक जगत में इस्लामी आतंकवाद से त्रस्त यूरोपीय तथा मध्य पूर्व के देश अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। भारत में अल्प संख्यक समुदाय की महिलाओं ने न केवल शैक्षिक ऊँचाईयाँ प्राप्त की है वरन लेखन राजनीति, प्रबन्धन और विशेषज्ञता के नये आयाम स्थापित कर लिये हैं शरिया के नाम पर लगभग 30 साल पहले इतिहास ने करवट ली थी। शाहवानों के प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को संविधान ने उलट दिया था। इतिहास अपने को दोहराता है। फिर एक बार शायरा बानो ने मानवाधिकार की रक्षा के लिए न्यायालय में दस्तक दी हैं समय बदल चुका है। उस समय शाहबानो अकेली पड़ गई थी और अल्पसंख्यकों के सामने घुटने टेके कांग्रेस की सरकार थी। आज शायरा बानो के पक्ष में शाइस्ता झंवर, डॉ. नाहिद जाफर, मुमताज जहाँ और अस्माखान जैसी नेतृत्व देने वाली महिलाएं हैं यह मुस्लिम महिलाओं के मानवाधिकारों का प्रश्न है, उनके सम्मान का प्रश्न है। शरिया के नुमाइन्दों को बदलती हवा के रूख को पहचानना चाहिए। देर सबेर यह संघर्ष भी जीत की भट्टी से तप कर निकलेगा।।

इसलिए साक्षरता नहीं शिक्षा, केवल व्यवसायिक शिक्षा नहीं वरन संस्कार युक्त शिक्षा देश की प्रगति का आधार बनेगी। पविर्तन की यह गति जितनी तेज होगी। भारत एक सर्वशक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा।

## सूचनाएँ :-

1. अनेक शाखाओं से यह सूचना मिलती है कि एल.पी.जी. सिलिन्डर की सबसिडी छोड़ने के लिए लोगों को प्रेरित किया। 1 जून से 30 जून तक क्या परिषद् के 55000 सदस्य यह छोड़ सकते हैं। प्रान्तशः संख्या 'नीति' मेल पर 30 जून तक प्रेषित करें।
2. प्रौढ़ साधना एवं महिला सहभागिता शिविर इस वर्ष आंचलिक आधार पर सम्पन्न होने हैं। इनकी विषय सूची एवं विवरण तथा मांग करने पर वक्ता केन्द्र द्वारा सूचित किये जायेंगे।
3. सामाजिक महत्व के प्रकल्प : जैसे बेटी बचाओ, नशा मुक्ति, जल संरक्षण, पर्यावरण स्वच्छता, हरित बाल गोकुलम, पॉलीथिन मुक्त भारत आदि विषयों पर गोष्ठियाँ आयोजित कर शाखाएँ प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं।
4. इस वर्ष कुछ राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित करने की योजना रीजनल स्तर पर है। विषय निर्धारण किये जा रहे हैं। सुझाव प्रेषित करें।
5. युवा सम्मेलनों के द्वारा युवाओं में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण, देश के प्रति समर्पण का भाव निर्माण करने की प्रेरणा देने के विशाल कार्यक्रम सभी प्रान्तों को विचार करना चाहिए। अधिकृत वक्ताओं का निर्धारण पूर्व नियोजित हो। -**सम्पादक**

राष्ट्रीय संगठन के रूप में परिषद् ने समाज में एक प्रेरणादायी स्थान बना लिया है। इसका श्रेय सभी कार्यकर्ताओं को जाता है। लम्बे समय काम करते, प्रसिद्धि प्राप्त करते, समाज जीवन में यश प्राप्त करते, कुछ लोगों के मन में परिषद् को अपने पूरे नियन्त्रण में रखने का भाव आ जाता है। शायद इसीलिए चुनाव के समय वर्चस्व की प्रवृति का कुछ सूचनाएँ प्राप्त होती है। समाज के द्वारा सेवा कार्यों के लिए धन उपलब्ध कराया जाता है। ऐसी स्थिति में सामूहिक चिन्तन, सामूहिक नेतृत्व का भाव नहीं रहा तो कुछ निहित संकुचित वृति के लोगों का वर्चस्व हो जाता है। यह उचित नहीं है। हम कहाँ से चले, कहाँ आ गए। अनेक स्थानों पर नई टीम में दायित्व लेने से कुछ सदस्य इसलिए आना-कानी करते हैं कि अपेक्षित समय दे पाना उनके लिए सम्भव नहीं होता है। कुछ स्थान ऐसे भी है जहाँ अध्यक्ष या सचिव बनने के लिए अनेक प्रयोग किये जाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि ऐसे लोग समर्पण और सेवा के भाव से नहीं स्वार्थ और प्रसिद्धि के कारण परिषद् मे आते हैं। आर्थिक और नैतिक अनुशासन परिषद् के सदस्यों के लिए एक आवश्यक सूत्र है। ऐसे में जब कभी निर्वाचन प्रक्रिया में आर्थिक अनुशासनहीनता एवं नैतिक जीवन मूल्यों के स्खलन का आभास मिलता है तो मन को पीड़ा होती है। हमने परिषद् को सुविचारित राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के पोषण के लिए विकसित करने का संकल्प लिया है।

परिषद् की राष्ट्रीय टोली में लगभग सभी दायित्वधारी 10 वर्ष से अधिक समय से कार्य कर रहे हैं नये कार्यकर्ताओं के लिए कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष होता है। यह प्रान्त में नये कार्यकर्ताओं के लिए एक पाथेय होता है और बढ़ते दायित्व में उनके व्यवहार, रीति, नीति, कार्य पद्धति का प्रशिक्षण भी होता है। यह आग्रह रहता है कि पूरी टीम कार्यशाला में उपस्थित हो। कुछ मात्रा में दायित्व परिवर्तन के बारे में प्रकल्पों का प्रशिक्षण और जानकारी ऐसे लोगों के लिए अपेक्षित होती है। परन्तु सब अनुभवी कार्यकर्ता आग्रह से राष्ट्रीय कार्यशालाओं, बैठकों में अवश्य उपस्थित होते हैं। क्या उनका जाना आवश्यक है? क्या अनुभवी कार्यकर्ता को प्रशिक्षण में जाने से कुछ अनुभव प्राप्त होता है? इसका उत्तर है हाँ! वर्ष भर काम करते हमारे मन में समाज की विभिन्न घटनाओं का असर पड़ता है और इसलिए मन पर पड़े ऐसे मलिन विचारों को शुद्ध करने तथा अपने लक्ष्य का बार-बार स्मरण करने के लिए हम ऐसे आयोजनों में भाग लेते हैं। कुछ अति सामान्य घटना पर हम नहीं गये। तो आयोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हमारे निष्ठा और समर्पण पर प्रश्नचिन्ह लगता है। हमारी विश्वसनीयता क्या है। ध्येय के प्रति हमारा समर्पण क्या है। सामाजिक और पारिवारिक जीवन के छोटे से प्रसंगों पर हम न जाने क्या बहाना ढूंढ़ते हैं। एक कार्यकर्ता अपनी बेटी के संस्थान के उद्घाटन को छोड़कर कार्यशाला में जाने का निर्णय किया। समर्पण का यह उदाहरण है। परन्तु अगर कार्यकर्ता समूह में ऐसे आयोजनों का क्या लाभ! यह प्रश्न आता है तो यह गंभीर विचार का विषय है। ऐसे कार्यकर्ताओं का प्रभाव स्वत: शून्य हो जाता है। हम ही बुद्धिमान नहीं है। कार्यकर्ता हमारा व्यवहार देख रहा है। फिर जब ऐसे लोग यह शिकायत करते है कि शाखाएँ बात नहीं मानती, शाखाएं अनुशासन का पालन नहीं करती। ऐसा लगता है कि कभी न कभी हमारे किसी व्यवहार का ही अनुपालन हो रहा है। कभी हमने बात नहीं मानी। हम अपेक्षा करते हैं कि सब लोग हमारी बात मानें। यह कैसे संभव हैं इसका विचार करें। हम सब कार्यकर्ता एक ध्येय के लिए लगे हैं परिस्थितियाँ, तात्कालिक विचार, कार्य पद्धति में भिन्नता हो सकती है लेकिन संगठन के बिन्दु पर हमें एक राय प्रकट करना, एक सा व्यवहार करना यह अपेक्षित है। आज हम व्यक्तिगत मनतव्य से अगर संगठन के अनुकूल व्यवहार नही करते तो भविष्य में हम जब शीर्ष दायित्व पर होंगे तो उसी समस्या से आपका सामना होगा। अत: अपना व्यवहार निर्विवाद, निरपेक्ष, संगठन अनुकूल, प्रेरणादयी बनाने पर ध्यान दें। केवल समर्पण, संस्कार एवं सेवा की चर्चा से परिषद् नहीं बढ़ेगी तद्नुकूल व्यवहार भी करना होगा।

इस वर्ष कुछ नई योजनाओं को अंगीकार किया गया है। पर्यावरण के साथ वर्षा जल संरक्षण और युवा वर्ग के लिए नशा मुक्ति जागरूकता और महिला सशक्तिकरण के साथ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ मुख्य विषय हैं। सामूहिक सरल विवाह, नेत्रदान, रक्तदान सेवा और सामाजिक समरसता प्रमुख प्रकल्प हैं।

**ईश्वरीय कार्य ( रिसिया )**

बहराइच जिले के परिषद् कार्यकताओं ने रिसिया स्थान पर शाखा स्थापित की। यह शहर सरयू नदी के किनारे पर स्थित है। रिसिया के प्रधान के सहयोग से शाखा ने सरयू नदी के सूख गये विश्राम घाट पर सफाई एवं खुदाई का अभियान चलाया। ईश्वरीय वरदान! सरयू का प्रवाहित जल भूमि पर आ गया। यह समाचार आग की तरह फैल गया। विकास अधिकारी, ब्लॉक प्रमुख आदि ने बड़े दायरे में खुदाई के आदेश दिये। प्रवाहित जल मार्ग पर कई गाँवों में मनरेगा के तहत खुदाई शुरू की गई है। परिषद् की पहल पर हुए इस कार्य को लोग ईश्वरीय कार्य मानते हैं।

# कार्यशाला

**उत्तर रीजन :** (जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा व दिल्ली) के 16 प्रान्तों के पदाधिकारियों की कार्यशाला 23-24 अप्रैल, 2016 को केन्द्रीय कार्यालय के डॉ. सूरज प्रकाश सभागार में सम्पन्न हुई। 78 प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यशाला में राष्ट्रीय महामंत्री श्री अजय दत्ता ने महानगरों में कार्य विस्तार के साथ शाखा के सीमाओं के निर्धारण की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी प्रस्तावित नगरों तक शाखा स्थापित करने का आह्वान किया। संविधान एवं एकाउण्टस् की चर्चा राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजीव कुमार बंसल ने की। राष्ट्रीय मंत्रियों श्री श्रीनिवास बिहानी, श्री सुधीर वर्मा एवं श्रीमती शशि आजाद ने संगठन के लक्ष्य एवं विस्तार पर चर्चा की। श्री महेश शर्मा (प्रकाशन) श्री विपिन ढ़ींगरा (संस्कृति सप्ताह), श्री प्रवीन सिंघल (सेमीनार), श्री मदन मलिक (विकलांग), श्री राधेशाम महाजन (समग्र ग्राम विकास), श्री रमेश चन्द्र गोयल (पर्यावरण), श्री वासुदेव बंसल (स्वास्थ्य) श्री सी. पी.आहूजा (गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन) ने विषय प्रस्तुत किये। डॉ. बजरंगलाल जी, क्षेत्रीय संघचालक ने परिषद् के वैचारिक अधिष्ठान पर सार्थक उद्‌बोधन दिया। इसके सम्पादित अंश अन्यंत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं। श्री सुरेन्द्र कुमार वधवा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) एवं श्री विनीत गर्ग (राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री) के निर्देशन में प्रान्तीय आख्या, प्रान्तशः परिचय एवं प्रवास और विस्तार की समूह बैठकें सम्पन्न हुई। डॉ. संतोष गुप्ता (संस्कार), श्रीमती अविनाश शर्मा (महिला एवं बाल कल्याण) योजनाओं की जानकारी दी। श्री जीवनराम गुप्ता चेयरमैन (संस्कार), श्री यशपाल गुप्ता चेयरमैन (सेवा), श्री चन्द्रसेन जैन ने अध्यक्षता की। श्री राकेश सचदेवा (भारत को जानो) श्री जोगिन्दर मदान (कार्यशाला) ने शाखा संचालन तथा कार्यकर्ता व दायित्वबोध कराने पर बल दिया।

मुक्त चिन्तन के सत्र में अनेक प्रान्तीय तथा रीजनल पदाधिकारियों ने जिज्ञासा प्रस्तुत की। उपस्थित सभी प्रतिनिधियों की भागीदारी इस सत्र में सम्पन्न हुई। समापन सत्र में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री वधवा जी कार्यशाला की लक्ष्य आधारित कार्य योजना पर सहमति जताई। उन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ लक्ष्य पूरा करने पर बल दिया। श्री विनीत गर्ग के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान से कार्यशाला का समापन हुआ।

**उत्तर मध्य रीजन :** उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड राज्य की कार्यशाला मुरादाबाद में सम्पन्न हुई। इसमें 11 प्रान्तों के 77 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री केशव दत्त गुप्ता ने सभी दायित्वधारियों को शपथ दिलाई। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री चन्द्रसेन जैन ने परिषद् के दर्शन एवं उद्देश्यों की चर्चा की। उन्होंने नये संविधान के अनुसार सभी को निष्ठा से काम करने का सुझाव दिया। रीजन की बहुउद्देश्यीय स्मारिका का विमोचन राजीव अग्रवाल ने सम्पन्न कराया। प्रान्तशः परिचय के बाद संगठन क्षेत्र के मंत्री सुनील खेरा, कुलभूषण, मनोल गोयल, मुकेश जैन, ब्रह्मानन्द पेशवानी ने अपने-अपने क्षेत्रों में संगठन की स्थिति एवं लक्ष्यों की चर्चा की। इसी सत्र में राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजीव कुमार बंसल ने कार्यशाला की रूपरेखा एवं नये संविधान के प्रारूप की चर्चा की। अनिरूद्ध अग्रवाल ने प्रान्तीय तथा शाखाओं के लेखा रख रखाव के विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला।

समूह चर्चा में प्रान्तीय तथा रीजनल दायित्वधारी अलग-अलग समूह में एकत्र हुए। प्रवास, लक्ष्य तथा कार्य योजना, शाखा संचालन, प्रान्तीय कार्यशाला आदि विषयों पर गहन चर्चा हुई। सेवा सत्र में श्री प्रमोद दादू, संजीव जैन, रमेश लालवानी, अनुराग दुबलिश तथा संरक्षक श्री अविनाश ओहरी ने विचार प्रकट किये। संस्कार प्रकल्प में कवल साहनी, राजीव अग्रवाल, नवीन कुमार, अजय विश्नोई, डॉ. हरिशचन्द्र गुप्ता ने अपने प्रकल्पों पर चर्चा की।

महिला एवं बाल विकास सत्र में डॉ. चम्पा श्रीवास्तव ने प्रकल्प उपयोगिता एवं गुणवत्ता की चर्चा की। श्रीमती बीना अग्रवाल, डॉ. दिव्या लहरी, भगवान सहाय अग्रवाल, डॉ. संजीव जैन, डॉ. नीतिन दालभ, हरिनारायण चतुर्वेदी के विचारों का समापन श्रीमती सावित्री वार्ष्णेय ने किया। समूहगत चर्चा के निष्कर्ष डॉ. आर.बी. श्रीवास्तव एवं श्री संजीव कुमार बंसल ने प्रस्तुत किये। रीजनल अध्यक्ष श्री केशव दत्त गुप्ता ने जिज्ञासा समाधान किया। उन्होंने आगामी बैठकों की सूचना भी दी। 25 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य लेकर सभी प्रान्त कार्य में जुटें यही आह्वान किया गया। श्री सूर्य प्रकाश जी संघचालक के द्वारा कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया गया। श्री शशिभूषण शास्त्री जी के धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान से कार्यशाला का समापन हुआ- **मुकेश जैन**

**मध्य रीजन :** मध्य रीजन के 13 प्रान्तों के 72 दायित्वधारियों की उपस्थिति में दो दिवसीय कार्यशाला भोपाल में सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम पारीक एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी.एस.कोकजे ने कार्यशाला की उपादेयता और कार्यकर्ता के गुणों को चिन्हित करते हुए स्वप्रेरणा और समर्पण से कार्य करने का आह्वान किया। श्री कोकजे ने संगठन के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्ष का समन्वय करते हुए अपने दर्शन का बार-बार स्मरण करने का आग्रह किया। कार्य का मूल्यांकन और प्रासंगिकता पर भी विचार करना आवश्यक है। विभिन्न सामाजिक समस्याओं में परिषद् की प्रभावी भूमिका हो सकती है। इसका भी विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री अरुण डागा ने प्रान्त संचालन, वार्षिक कार्ययोजना, लक्ष्य तथा बैठकों की रोचकता पर बल दिया। श्री मालचन्द गर्ग, राष्ट्रीय मंत्री वित्त ने प्रान्तीय लेखा तथा नवीन परिवर्तनों की विस्तृत जानकारी दीं श्री सम्पत खुरदिया,ऑडीटर जनरल ने संविधान के प्रावधानों का जिक्र किया और जिज्ञासा समाधान किया। समूह की बैठकें क्रमशः संगठन, रीजनल, प्रान्तीय अधिकारियों के समूह में हुई। इसमें प्रवास, लक्ष्य एवं प्रान्तीय कार्ययोजना पर चर्चा हुई।

डॉ. त्रिभुवन शर्मा (समूहगान) श्री राकेश गुप्ता (ग्राम विकास), डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी (वनवासी सहायता), श्री अनिल गोयल (सेवा), श्री पवन अग्रवाल (विकलांग) विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री अशोक जाधव जी ने निष्कर्ष प्रस्तुत किये। सम्पर्क सत्र में श्री अशोक वशिष्ठ, एच.पी.गर्ग, मुकन सिंह राठौड़ (संस्कृति सप्ताह, स्थापना दिवस) आदि द्वारा विचार रखे गये। संचालन श्री सीताराम गोयल, अध्यक्षता डॉ एस.एन.हर्ष ने की। छठे सत्र में श्रीमती संतोष गोधा, ज्योति जैन, डॉ. मदन गोपाल वार्ष्णेय ने क्रमशः बेटी बचाओ अभियान तथा सार्थक कार्यक्रमों पर चर्चा की। पर्यावरण संरक्षण, भूजल संरक्षण, हरित बाल गोकुलम पर जानकारी दी गई।

समापन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम पारीक ने प्रकल्प का भाव समझकर कार्यक्रम करने का सुझाव दिया। सभी रीजन में महिला एवं प्रौढ़ साधना शिविर आयोजित हो, कार्य विस्तार एवं कार्यकर्ता निर्माण की दृष्टि विकसित की जाए। भोपाल की टीम ने व्यवस्था पक्ष को मजबूत बनाया। संयोजन कमल प्रेमचन्दानी ने किया।

**पूर्वी रीजन :** 30 अप्रैल–1 मई, 2016 को भुवनेश्वर (उडीशा) में पूर्वी रीजन का कार्यशाला के उद्घाटन मेजर जनरल बी. के. महापात्रा ने की। उन्होंने युवा सहभागिता एवं सक्रियता पर विशेष जोर देते हुए देश की चुनौतियों का जिक्र किया। राष्ट्रीय उपाध्यक्षा डॉ. (श्रीमती) इन्दिरा बड़ठाकर द्वारा शपथ ग्रहण तथा राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री एस.एन. पाण्डा द्वारा कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। प्रान्तशः दायित्वधारी परिचय के क्रम में यशपाल गुप्ता, चेयरमैन सेवा ने लेखा के रख रखाव, श्री पाण्डा ने संविधान के परिवर्तन पर विचार प्रस्तुत किये। राष्ट्रीय मंत्री संगठन डॉ. वाल्मीकि कुमार, गीता पटनायक, शंकरलाल चक्रवर्ती, स्वदेश रंजन गोस्वामी ने अपने रीजन की संगठनात्मक स्थिति, विस्तार तथा प्रवास की चर्चा की।

समूह बैठक में प्रान्तीय दायित्वधारी तथा क्षेत्रीय दायितवधारियों की अलग–अलग बैठक में प्रकल्प, लक्ष्य, विस्तार, प्रवास तथा प्रभावी संचालन पर चर्चा हुई। महिला दायित्वधारियों के अलग समूह में गीता पटनायक और रीता भट्टाचार्य ने महिला गतिविधियों की आवश्यकता पर बल दिया। सेवा प्रकल्प सत्र में यशपाल गुप्ता (चेयरमैन सेवा) की अध्यक्षता में श्रीमती बीना बोरा, जे.पी. मिश्रा, के.सी जैन, डॉ. एस.एन. पटेल ने प्रकल्पों के विस्तार पर चर्चा की। संस्कार सत्र में प्रमोद भगत (समूहगान), जे. पटनायक (भारत को जानो), उदय चन्द्र गुप्ता (गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन), पी.के.अम्बष्ठ (संस्कृति सप्ताह), प्रो. डी.डी.मिश्रा (कार्यशाला), रीता भट्टाचार्य (महिला सहभागिता) पर विचार प्रकट किये।

सम्पर्क प्रकल्प सत्र में श्री दीपक रूइया, मिथिलेश कुमार वर्मा, यू.के.वर्मा, ए.एन. चौधरी, देबल कान्ति सरकार ने विचार प्रकट किये। छठे सत्र में अमल चन्द्र राय (भूजल संरक्षण) न्यायमूर्ति मोहन्ती (संस्कार प्रकल्प) पर विचार रखे। कार्यशला में 75 मे से 42 दायित्वधारियों ने भाग लिया। श्री सुरेश जैन, राष्ट्रीय संयुक्त संगठन महामंत्री ने कार्यशाला का मार्गदर्शन करते हुए शाखा विस्तार के साथ सार्थक और प्रासंगिक सेवा कार्यों पर बल दिया। श्री जी.पी.सिंह के कुशल मार्गदर्शन में कार्यशाला सम्पन्न हुई।

**West Region :** 8 states of western region were represented in the regional workshop held at Nashik on 30th - 1st May 2016. Shri Prakash Pathak founder of Shri Guruji Rugnalaya Nashik inaugurated the workshop in the presence of Shri Sitaram Pareek, Nationap President.

Shri Ajitbhai Shah National Vice President West region, Sampat Khurda, B.L.Gaggar, Neeraj Gupta, S.K. Jain , Chairman NGSC was present in the workshop. Discussions opened for expansion of branches, and membership and protocol, impressive conduction of sates. Shri B.LGaggar explained newly amended rules and bye laws of BVP. He replied the quarries made by the state office bearers. National President Shri Pareek ji stressed the need of coordination between branches and states. He appealed to leave ego and try to work together. Happiness and self-satisfaction is felt with the social work on accordance with humanity and sensitivity.

Shri R.P. Sharma Ex. National President shared his ground route experiences. Ajit Bhai stressed the quality of work and social and moral responsibility we have accepted as can be fulfilled by our dedication. Shri Umesh Rathi arranged the experience in his corporate as hall. It was evident that delegates were given opportunity to stately with family of the members, Shri Apana Raths a manager to visit a Physiotherapy Centre for Celebral polsy patients free of cost. Members appreciated the efforts. - **D.B. Chitile,** Add. Secy. General

## बदलते मौसम में सेहत का कैसे रखे ख्याल

सेहत के लिए मौसम के अनुसार दिनचर्या होना चाहिए। अगस्त-सितम्बर के माह में अजीब सी धूप का मौसम होता है। बरसात का मौसम बिदा ले रहा होता है। यह मौसम बीमारियों को आमंत्रण देने वाला होता है। अत: इस मौसम में प्रात: देर तक जॉगिंग या व्यायाम और शाम को भोजन के पश्चात देत रात तक जागना या खुले बदन घूमना हानिकारक होता है। इस ऋतु में आलस्य खूब आता है और बिस्तर में दबे रहने का इरादा होता है, लेकिन आलस्य करना ठीक नहीं।

**इस माह में इन बातों पर अमल करके आप स्वस्थ एवं तंदरूस्त रह सकते है-:**

- सुबह जल्दी उठना ही पर्याप्त नहीं है, सुबह उठकर तेज चाल में चलना फायदेमंद होता है।
- सूबह की सैर (morning walk) के पश्चात नींबू पानी का सेवन करें।
- शीतल जल से स्नान करें।
- हल्का नाश्ता करें। नाश्तें में पेय पदार्थ अधिक लें। फलों के सेवन के लिए यह मौसम उपयुक्त होता है।
- इस मौसम में त्योहार आरंभ हो जाते हैं, अत: कोई एक उपवास अवश्य करें।
- इस मौसम में भगवान का आराधना करें इससे मन को शान्ति एवं शरीर को शक्ति मिलती है।
- विदेशों में माह सितम्बर को खुशियों का माह कहा जाता है, लेकिन भारत में यह बीमारियों का वाहक है, क्योंकि धूल-मिट्टी के द्वारा कीटाणु इसी माह सबसे ज्यादा फैलते हैं।
- इस मौसम में नीम की पत्तियों का सेवन किसी न किसी रूप में जरूर करें।
- इस माह की धूप से अवश्य बचें, यह धूप आँख आना (conjunctivitis) रोग लेकर आती है। अत: बिना चश्में के बाहर ना निकलें।
- इस मौसम में स्वाइन फ्लू, मलेरिया, डेंगू तथा वायरल का प्रकोप ज्यादा रहता है, अत: स्वच्छता का विशेष ख्याल रखें।
- बाहर से आने के बाद हाथ-पैर-मुँह धोने में जरा भी आलस ना करें।
- इस माह में त्वचा का संक्रमण बढ़ जाता है, अत: त्वचा की नियमित साफ-सफाई अनिवार्य है।

## सर्वांगीण विकास

भारत विकास परिषद् देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ विकास का अर्थ बहुत विस्तृत है एवं इसमें प्रगति तथा समृद्धि भी शामिल है और ये दोनों शान्ति से जुड़ी हुई हैं। अस्थिरता शान्ति की शत्रु है। यदि देश में अशान्ति है एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त है तो प्रगति असंभव है। इसलिए भारत विकास परिषद् शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने की हामी है और चाहती है कि जन सेवायें, व्यापार, उद्योग, कृषि, न्यायालय, विद्यालय इत्यादि ठीक प्रकार से कार्य करते रहें। परिषद् किसी ऐसे आन्दोलन का समर्थन नहीं कर सकता जिससे सामान्य जीवन में व्यवधान उत्पन्न हो क्योंकि इससे विकास रूक जाता है। इसलिए हम आतंकवाद एवं हिंसा का विरोध करते हैं क्योंकि इनसे देश कमजोर होता है। हमारी फौजें सीमाओं पर देश की सुरक्षा मे लगी रहती है एवं यदि उन्हें घरेलू हिंसक या शान्तिपूर्ण आन्दोलन को दबाने में इस्तेमाल किया जाता है वो देश खतरे में पड़ जाता है। ऐसे समय में जब कि देश बाहरी आक्रमण, आंतरिक आन्दोलन एवं देश के टुकड़े करने के षडयंत्रों का सामना कर रहा हो तो हमारा ध्यान देश की एकता एवं अखंडता की ओर लगा होना चाहिए। प्रत्येक देशभक्त भारतवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह साधारण विवादों में हिंसात्मक आन्दोलनों से बचे क्योंकि ऐसे मामलों का समाधान समय बीतने के साथ स्वयमेव हो जाता है।

-**डॉ. सूरज प्रकाश** के लेखन से चयनित

## पुस्तक चर्चा

औद्योगिक नगरी भीलवाड़ में परिषद् ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रकल्पों से सर्व स्वीकार्य छवि निर्माण की है। गत 17 वर्षों से लगातार संस्कार सरिता नामक पुस्तिका की 25500 प्रतियाँ वितरित की गई है। पुस्तक में दैनिक जीवन के मंत्र, प्रार्थना, भजन, उत्सव करने और न करने योग्य कार्य, सुख-दुख, कर्तव्य, योगासन, पौधारोपण, नाम जप आदि 40 विषय प्रकाशित है। परिवारों के लिए संग्रहणीय पुस्तक हैं। **सम्पर्क** -कैलाश डाड, मो. 9414115925, गोविन्द सोडानी, मो. 9414111630

**बाड़मेर, राजस्थान पश्चिम :** शाखा द्वारा राजकीय सीनियर स्कूल के 60 छात्रों का रक्त समूह जांच सम्पन्न की गई। जन सेवा समिति के सहयोग से नेत्रों की नि:शुल्क जांच सम्पन्न की गई। प्रधानाचार्य अम्बालाल खत्री उपस्थित रहे।

**अबूरोड :** शाखा द्वारा रक्त समूह जांच के लिए शिविर लगाया गया। अध्यक्ष संजय सिंघल और भूपेन्द्र सिंह ने व्यवस्था सम्भाली।

**जोधपुर :** नारायण हृदयालय अहमदाबाद और भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में हृदयरोग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 62 रोगियों का पंजीकरण प्राप्त हुआ। 20 रोगियों को आपरेशन की सलाह दी गई। नारायण अस्पताल ने ऑपरेशन में विशेष छूट प्रदान की। सदस्यों तथा पदाधिकारियों ने व्यवस्था संभाली। शिविर का लाइव टेली कास्ट हुआ। डॉ. अतुल अस्लेकर की सक्रियता एवं चिकित्सकीय योग्यताओं को सराहा गया और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष चांद रतन मुथा ने धन्यवाद दिया।

**सांचोर :** शाखा द्वारा विकलांग सेवा के अन्तर्गत 886 मरीजों का परीक्षण किया गया तथा प्रेम चन्द्र छाजेड़ परिवार की ओर से नि:शुल्क दवा वितरण किया गया। पुनर्वास केन्द्र पर 32 विकलांग लाभान्वित हुए।

## देवों को आयुध

**देवता व्यक्ति नहीं, शक्ति का स्वरूप हैं। निश्चित रूप से उनके प्रिय अस्त्रें-शस्त्रों में भी गहरे अर्थ छिपे हैं:**

**अंकुश :** बुद्धि के देवता गणपति का यह अस्त्र आत्मनियंत्रण का प्रतीक है। हाथी को काबू में रखने वाला अंकुश यह संदेश देता है कि विवेक द्वारा ही इंद्रियों एवं महाशक्तिशाली मन पर संयम रखा जा सकता है।

**चक्र :** भगवान विष्णु का अस्त्र चक्र जीवन की गतिशीलता का प्रतीक है। ठहराव में विकृति आती है, इसी कारण सृष्टि का कण-कण गतिशील है। भगवान विष्णु ने हर युग की परिस्थितियों के अनुकूल गुणों को धारण कर ही धरती पर जन्म लिया और अत्याचार का अंत किया। वस्तुत: यह अस्त्र उन सिद्धान्तों, आदर्शों और उद्देश्यों का परिचायक है, जो सत्यमेव जयते का शंखनाद करते आ रहे हैं।

**गदा :** अनीति एवं अत्याचार का संहार करने वाले भगवान विष्णु का यह अस्त्र बुद्धि का प्रतीक है। इसे दंडनीति का पर्याय भी कहा गया है। गोल, कुंभाकार, अंडाकार आदि रूपों में सुशोभित गदा का रामायण और महाभारत में व्यापक उल्लेख मिलता है। वृत्तिसंहिंता में गदा को वासुदेव कृष्ण के पुत्र साम्ब का आयुध माना जाता है।

**त्रिशूल :** वैदिक साहित्य के अनुसार मनुष्य के कल्याण के मार्ग में तीन बंधन हैं- लोभ, मोह और अहंकार। शिव का त्रिशूल इन्हीं का विनाश करने वाली शक्ति का प्रतीक है।

**खड्ग :** माँ काली का शस्त्र खड्ग आकाश-तत्व का प्रतीक है। इसे वैराग्य को सूचित करने वाला प्रतीक माना गया है। शुंगकाल, मौर्यकाल एवं गुप्तकाल में माँ काली के अतिरिक्त अन्य देवों के साथ भी खड्ग का अंकन किया गया है।

– **साभार: देव संस्कृति विश्वविद्यालय**, हरिद्वार

**कुवारिया-भीलवाड़ा, राजस्थान मध्य :** शाखा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव श्री राजकुमार के सहयोग से 42 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में राजकीय अस्पताल राजसमंद का सहयोग रहा।

**हम्मीरपुर, राजस्थान पूर्व :** सवाई माधोपुर में नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 580 नेत्र जांच हुई तथा 121 मरीजों का लेंस प्रत्यारोपण किया गया। इस अवसर पर श्रीमती माया गौतम, उपाध्यक्ष, अध्यक्ष नरेन्द्र मोहन, सचिव प्रवीन सक्सैना की घोषण अध्यक्ष श्री गिर्राज सिंघल ने की।

**प्रताप जयपुर, राजस्थान उत्तर पूर्व :** शाखा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सदस्यों ने रक्तदान किया।

**बारां, राजस्थान दक्षिण पूर्व :** शाखा द्वारा नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। 170 मरीज पंजीकृत हुए। कोटा अस्पताल

की टीम ने मरीजों का परीक्षण किया तथा ऑपरेशन के लिए संस्तुत किया गया।

**भवानी मंडी :** शाखा द्वारा रिंकी राजवानी (21) का आकस्मिक निधन होने के कारण परिवारजनों की सहमति से प्रकल्प प्रभारी कमलेश दलाल ने नगर का 18वाँ नेत्र दान करायां कोटा के शाइन इण्डिया फाउडेशन ने इसे प्राप्त किया।

**श्री करणपुर, राजस्थान उत्तर :** शाखा द्वारा शहीदी दिवस पर 111 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर प्रभारी राजेन्द्र माटू ने स्वस्तिक रक्त बैंक की सहायता से आयोजन सम्पन्न किया। भारतीय नववर्ष पर विद्यालयों में बैनर, शोभा यात्रा, चन्दन तिलक लगाकर शुभकामना दी गई। जे.पी.चौक पर ठंडे जल की प्याऊ शुरू की गई।

**पटियाला-भगत सिंह, पंजाब पूर्व :** शाखा द्वारा भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से श्री एस.के.सूद ने रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। 40 लोगों ने रक्तदान किया। गज्जू आजरी के कर्मचारियों एवं सरपंच ने हिस्सा लिया।

**सुनाम :** शाखा द्वारा स्कूल में दंत परीक्षण कार्यक्रम चलाया गया। 178 बच्चों का परीक्षण किया गया। डॉ. श्याम लाल बंसल एवं डॉ. प्रेम गुगनानी ने परीक्षण किये।

**सुखदेव-लुधियान, पंजाब उत्तर :** शाखा द्वारा दन्त चिकित्सा जांच शिविर लगाया गया। 260 मरीजों के दांतों का परीक्षण किया गया। इलाज तथा दवाई बांटी गई।

## वाहनों का अर्थ

**हंस :** कहा जाता है कि हंस नीर (जल) और क्षीर (दूध) को अलग-अलग कर देता है। इसलिए यह विवेक का प्रतीक है। इसी कारण देवी सरस्वती ने उसे अपना वाहन बनाया है। हंस मोती चुंगकर सर्वश्रेष्ठ को ग्रहण करने का संदेश देता है।

**वृषक :** कृषक का प्रिय वृषभ (बैल) श्रमशीलता का प्रतीक है। जन-जन के अराध्य शिव जी का वाहन बैल भी उनके साथ पूजा जाता है। यह हमारी संस्कृति में श्रम की उपासना का अप्रतिम उदाहरण है।

**गरुड़ :** भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ सांपों का शत्रु है। इस कारण यह कहा जाता है कि गरुड़ विष को खत्म करने वाला अर्थात आतंक को नष्ठ करने वाला पक्षी है।

**अश्व :** अश्व (घोड़ा) को स्फूर्ति एवं शक्ति का प्रतीक माना जाता है। हमारी सृष्टि के साक्षात देवता माने जाने वाले सूर्य के रथ में सात घोड़े होते हैं, जो सात किरणों के प्रतीक हैं अश्वमेघ यज्ञ से संबद्ध होने के कारण भी इसे पूज्य माना गया है।

**गज :** गज अर्थात हाथी वैभव का सूचक है। पुराणों में कहा गया है कि धन-संपन्नता की देवी लक्ष्मी की अर्चना गजराज जल से करते रहते हैं। गज को बुद्धि के देवता गणपति का प्रतीक भी माना गया है।

**सिंह :** देवी दुर्गा का वाहन वनराज सिंह शक्ति का प्रतीक है, तभी तो स्वामी विवेकानन्द उद्घोष करते हैं-हे युवाओं, तुम सिंह की तरह निर्भय बनों और आगे बढ़े चजो। इस प्रतीक को वैदिक, बौद्ध, जैन तीनों धर्मों में अपनाया गया है।

**मट्टू, हरियाणा पश्चिम :** शाखा द्वारा रक्तदान शिविर में 120 यूनिट रक्त दिया गया। शिविर का उद्घाटन मेधवी छात्रा प्रियांका द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान को बढ़ावा देने के इस कदम की प्रशंसा हो रही है।

**घरौंडा, हरियाणा उत्तर :** शाखा द्वारा हृदय रोग निवारण तथा कारणों पर डॉ. रूपेश तथा परवेज सैफी ने जानकारी दी। नव वर्ष पर 6000 पत्रक बांटे गये। मंडी मनी राय पर महाआरती और प्रसाद वितरण हुआ। 50 मरीजों को फिजियोथेरेपी सेवा दी गई। फिजियोथेरेपी स्थाई केन्द्र पर 50 मरीजों की सेवायें दी।

**काशी-वाराणसी, काशी प्रदेश :** शाखा द्वारा विश्व गुदी दिवस पर मधुमेह, रक्तचाप जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। 300 लोगों ने शुगर तथा रक्तचाप की जांच कराई। डॉ. रवीन्द्र शाह ने व्यवस्था संभाली। महमूरगंज में नेत्र शिविर का आयोजन हुआ। डॉ. ओझा (नेत्र सर्जन) से 50 ऑपरेशन करने का निवेदन स्वीकार हुआ। विवेकानन्द पार्क में होली मिलन सम्पन्न हुआ।

**बहराइच, अवध प्रदेश :** शाखा सदस्य सुषमा देवी को ओ निगेटिव रक्त की आवश्यकता पड़ने पर शाखा सचिव अजय अग्रवाल ने रक्तदान किया। परिषद् की इस कार्य के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

**जनकपुरी मुख्य, दिल्ली दक्षिण :** शाखा द्वारा सेवा के क्षेत्र में कई प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। फिजियोथेरेपी केन्द्र के अन्तर्गत 40 मरीज प्रतिदिन उपचार प्राप्त करते हैं 3 कर्मचारी थेरेपी में सहयोग करते हैं। नेत्र जांच केन्द्र श्री पंकज शर्मा के सहयोग से इस

केन्द्र पर नेत्रों की नियमित जांच की जाती हैं मोबाइल डेंटल वैन के द्वारा दांतों की चिकित्सा एवं परीक्षण आधुनिक मशीनों से किया जाता है।

**विकलांग केन्द्र पटना, दक्षिण बिहार :** पोलियो प्रभावित बच्चों को करेक्टिव सर्जरी से ठीक करने का केन्द्र पटना में प्रतिदिन सेवा के लिए तत्पर है। डॉ. एस.एस.झा की टीम के द्वारा 40 बच्चों का परीक्षण कर उनके ऑपरेशन सम्पन्न हुए। डॉ. मिथिलेश, डॉ. ललित किशोर एवं टीम का सहयोग रहा। यह शिविर के.पी.एस.केसरी के द्वारा प्रायोजित था।

**सितारगंज, उत्तराखण्ड पूर्व :** अन्धता निवारण समिति के सहयोग से नेत्र परीक्षण शिविर में 450 मरीजों का परीक्षण किया गया। डॉ. प्रवीन कुमार श्रीवास्त द्वारा 35 उपयुक्त मरीजों का ऑपरेशन हुआ।

**Shaheed Sukhdeo, Ludhiana, Punjab North :** Branch organized 11th Viklang camp at Kirti Nagar, Ludhiana. 44 limbs were distributed by Ranjit Singh Dhileo MLA. The team whole hearted made efforts to make the camp a success, is appreciated in the town. In a dental camp 260 patients were checked up the member paid homage to Sukhdeo singh at his residence.

**Vivekanand, Sujanpur :** Branch organized a Bood donation camp at Community Health Center. 50 Unit of blood was donated by members and friends.

**Swami Vivekanand-Sunam, Punjab East :** The branch organized a dental checkup for school students. 178 students were checked up and tooth paste distributed to all students.

**Yuva Bharat Gurgaon, Haryana South :** A women health awareness meeting was organized Dr. Shilpi and Anuradha discussed the possibilities of Breast and Uterus cancer, 80 ladies were present in the meeting. Dr. Vijay Prabha presented power point presentation on the topic. 87 patients were checked up for sugar, bone blood, and hemoglobin tests.

**Fatehabad, Haryana West :** Branch organized a medical checkup camp for sugar and BP, 44 members were enrolled. Team of Pushpe laboratory arranged the medical test.

**C-2, Janakpuri (Delhi South):** The branch organized *free eye, ear, sugar and BP check up camp.* Medfort Hospital and Forever Hearing clinic was associated for technical help, 94 member were checkup for blood sugar, eye checkup.

**West Patel Nagar, Delhi North :** in west Patel Nagar main market a blood donation camp was organized to support of Shalimar Blood bank about 182 unit of blood was donated: Shri Mahesh Chadha CEO of MAX group graced the occasion.

**Indira Nagar, Lucknow, Avadh Pradesh :** doated tricycle to Sajidabano and Shabano, M.K. Srivastava was honoured after completion of 75 years dental checkup was carried out to students of Saraswati Acedmy. Dr. Viramjit Singh and Dr. Seema checked up the students.

**Birjhora, Assam :** Branch organized Viklang Camp and distributed 12 Tricycles, 1 wheel chair, 1 walking stick and 1 pair of crutches with the financial help of IOC, Manhendra Sharma Chief Manager IOC were present as Chief Guest. Dr. R. Nansha Director health services graced the occasion.

**Dibrugarh :** The branch organized a Viklang Camp where 43 disabled persons attended the camp. 13 person wee fitted limbs as per requirement. Niranjan Bhagaria financially assisted the camp on the memory of his father.

## ''मुझे कुछ कहना है'' एक अभिनव प्रयोग

**सुभाष ( कोटा )** शाखा के डॉ. तेजेश और डॉ. अखिल ने रचना धर्मिता के क्षेत्र में परिषद् के लिए एक ऐसे कार्यक्रम की रचना की जिससे वर्तमान परिवार प्रणाली के विरोधाभासी मूल्यों और जीवन शैली पर गहन चिन्तन के लिए सभी सदस्य मजबूर हो गये। सदस्य परिवारों को आमंत्रित किया गया। परिवार के वरिष्ठ सदस्य के बारे में परिवार की सोच के विचारों के रूप में प्रस्तुत किया गया। ''मुझे कुछ कहना है'' कार्यक्रम का शीर्षक था। परिवार के वरिष्ठजनों के बारे में हम अक्सर धन्यवादी नहीं हो पाते हैं। उनके त्याग, समर्पण और सादगी के बारे में उनकी उपस्थिति का खुशनुमा एहसास, गिले-शिकवे, मान मनोबल की रोचक प्रस्तुतियाँ दी गई।

# युवाओं में बढता मादक द्रव्य व्यसन : एक ज्वलंत समस्या

**खुशियाँ कम और अरमान बहुत है,**
**जिसे देखिए यहाँ - हैरान, परेशान बहुत है।**
**करीब से देखो तो है रेत के घर,**
**दूर से तगर उनकी शान बहुत है।**

कुछ ऐसा ही नाजारा हमें आज विकासशील से विकसित होती सभ्यता में देखने को मिल रहा हैं विकास के नाम पर आधुनिकता की दौड़, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, उन्नति के शिखर पर पहुँने की होड़ में हमें - विशेषकर हमारे नौजवानों को बहुत बड़ी कीमत चुकाने के लिए विवश कर दिया है। सबसे बड़ा मूल्य जो हम चुका रहे हैं वो है हमारी युवा पीढ़ी का मादक पदार्थों या नशीली दवाओं की ओर आकर्षित होना, जो कि अत्यन्त भयावह स्थिति की ओर इशारा कर रहा है। आखिर ये नशीले, मादक पदार्थों की लत (Drug Addiction) है क्या? इसके कारण क्या है? और क्याइसका निवारण सम्भव है?। ऐसे गंभीर प्रयनों का चिन्तन करना वर्तमान परिप्रेक्षय में अत्यन्त आवश्यक है।

मादक पदार्थों को विशेषकर हम अफीम, गांजा चरस, मारिजुआन, भांग, कोकीन,मारफीन, हशीश, एल.एस.डी., ब्राऊन सुगर, थेपोड्रिन यहाँ तक कि एस्प्रिन, डिस्प्रिन, कम्पोज आदि नामों से जानते हैं। ये पदार्थ अधिकतर दवाईयों में प्रयुक्त होने वाले अवयव होते हैं। निश्चित मात्रा और सुनिश्चित अवधि के लिए उपयोग में लाने पर तो औषधि का कार्य करते हैं परन्तु सीमा से बाहर और अत्यधिक सेवन करने पर इनकी लत लग जाती है जिसका उपयोग ना करने पर आदि व्यक्ति में विभिन्न अत्यन्त ही कष्टदायी शरीरिक व मानसिक लक्षण दिखने लगते हैं जिसका परिणामस्वरूप इसके आदी हो गये व्यक्ति के द्वारा इसका परित्याग करना लगभग नामुमकिन हो जाता है परन्तु ये श-प्रतिशत नामुमकिन भी नहीं।

**इस तरह के नशे की लत के मुख्यतः तीन कारण हो सकते हैं :-**

(1) **वंशानुगत :** एक शोद द्वारा ये बात सामने आई है कि वर्तमान में या पूर्व में नशे के आदी अभिीावकों के बच्चों में नशे की लत की स।भावना 58% ज्यादा पाई जाती है। इससे स्पप्ट है कि यह लत कुछ प्रतिशत वंशानूगत होती है।

(2) मनोचिकित्सीय : आज के विकास के दौर में हम जितनी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं उतनी ही तीब्रता से मनोवृत्ति भी बढ़ रही है। सर्वप्रथम तो हरेक क्षण सफल होने मानसिकता का दबाव, फिर अवसाद असुरक्षा, अकेलापन, तनाव, आत्मविश्वास की कमी अति संवेदनशीलता आदि प्रायः पाई जाने वाली प्रमुख मनोवृत्तियाँ हैं कहीं -न- कहीं ये मनोचिकित्सीय कारण मादक व्यसनों की ओर ढ़केलते नजर हाते हैं।

(3) **सामाजिक परिवेश :** वर्तमान सामाजिक परिवेश भी इस अंधेरे की गर्त तक पहुँचाने में कम जिम्मेदार नहीं है। आयु, आर्थिक स्तर, शिक्षा, माता पिता दोनों का नौकरी पेशा होना, एकल परिवार, उच्च स्तरीय जीवन शैली, असफलता, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण आदि प्रमुख कारणों में से है। अभिभावकों के अधुरे सपने पूरे करने का बाढ बेहतर से बेहतर साबित होने का दबाव, कभी शौक के नाम पर, कभी दोस्ती की आड़ में, कभी टेंशन तो कभी दुःखों का बहाना, तो कभी मजबूरी यहाँ तक कि बोरियत दूर करने या ऊब से बचने के नाम पर कुछ नया करने की सुखानुभूति प्राप्त करने की चाह में चाहे-अनचाहे मनुष्य नशे की लत में गिरफ्त होता चला जाता है। फिर धनोपार्जन या अन्य कारणों से व्यस्त माता पिता द्वारा आत्मग्लानि से उभरने के लिए बच्चों की हर जायज-नाजायज माँगों को पूरा करने की प्रवृत्ति, जेबखर्च के नाम पर मोटी से मोटी रकम उन्हें सौंप देने के कारण बच्चे इसका फायदा उठाते हैं और ऐसे व्यसनों पर खर्च करना शुरु कर देते हैं।

**परिणाम :** नशाखोरी में जिप्त होने पर व्यक्ति का झुकाव अन्य व्यसनों की ओर होने लगता है जिससे ना केवल उसका नैतिक पतन होने लगता है अपितु उसकी शारीरिक क्षमता का भी ह्रास होता है। भूख न लगना, चिड़चिड़ापन, अनमनापन, बूझे-बूझे रहने के साथ ही किडनी व दिमाग पर बहुल ही बुरा असर पड़ता है। यहाँ तक कि तंत्रिका तंत्र ( ) पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की वजह से व्यक्ति की सोचने समझने की शक्ति भी क्षीण हो जाती है।

**उपाय :** ड्रग से जुड़ी इस सामाजिक समस्या के निवारणार्थ अत्यन्त आवश्यक है कि नशे की गर्त में पड़े व्यसनियों का उत्थान और पुनर्वास योजनाओं को सररलता व सार्थकता के साथ लागू किया जायं। भारत में इस समय लगभग चार सौ से भी अधिक संस्थायें नशे की लत में गिरफ्त लोगों को उपचार सेवा उपलब्ध कराने हेतु कार्यरत हैं। इस लत को छुड़ाने के लिए मानसिक तौर पर तैयार किया जाता है जिससे मनोवैज्ञानिक उपाय प्रभावी सिद्ध होते हैं तथा परिजनों व मित्रों का सहयोग भी अत्यन्त आवश्यक

होता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) ने 1991 में संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ नियंत्रण कार्यक्रम (United National International Drug Control Programme - UNDCP) शुरू किया जो कि विश्वभर में ड्रग के वैध एवं अवैध व्यापार पर तीक्ष्ण दृष्टि रखता है। समस्त सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की गतिविधियों एवं उपायों को एकजुट करके ड्रग्स के इस सामाजिक कलंक के विरूद्ध सार्थक मोर्चाबन्दी के ध्येय से भारत सरकार द्वारा समाज कल्याण विभाग को एक केन्द्रिय अभिकरण घोषित किया गया हैं 1985 में नार्कोटिक ड्रग्स एवं साइकोट्रोपिक सब्टेन्सेस एक्ट के अन्तर्गत ड्रग्स के बवैध व्यापार के खिलाफ कठोर कानून बनाया गया जिसमें इसे व्यापार से जुड़े अपारध के लिए मृत्यु दण्ड तक का प्रावधान है।

समय आ गया है कि हम सब सजग सतर्क हो जाएं। अपने बच्चों के साथ (i) ज्यादा से ज्यादा वक्त व्यतीत करें (ii) उनके साथ मित्रवत व्यावहार करें (iii) उनके आयुवर्ग में होने वाले अनेक मानसिक व शरीरिक परिवर्तन को प्राकृतिक समझाकर उन्हें सहर्ष स्वीकार करने की सीख दें (iv) वातावरण से सामंजस्य, संतुलन स्थापित करना सिखायें, उनका आत्मविश्वस बढ़ायें, उन पर विश्वास करें। प्रत्येक बच्चा ईश्वर द्वारा प्रदत एक अद्भूत, अनमोल उपहार है, किसी और से उसकी तुलना ना करें, एक अच्छे माली की तरह उसकी जरूरतों को समझकर यथोचित सीचने से ही खूबसूरत फलदार या फूलदार वृक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

सरकारी तंत्र व सामाजिक संस्थाओं द्वारा किये जा रहे प्रयासों के साथ ही नैतिक जागरूकता और मानसिकता ही समाज को इस बुराई से मुक्त कर सकने में सक्षम हैं किशोर एवं युवा वर्ग को मानव जीवन के उच्च मूल्यों और उद्देश्यों का ज्ञान करना अति आवश्यक है, उनकी क्षमताओं का सही दिशा में उपयोग कर उचित मार्गदर्शन द्वारा ही नशीली दवाओं के सेवन जैसी सामाजिक समस्या के निवारण का माग प्रशस्त हो सकेगा।

आओ बिखरे हुए सामान से, अपने घर को सजायें।

खौफ हा जिन चिारगों को हवाओं का, उन चिरागों को हवाओ से बचायें।

-**डॉ. ब्रजेश कुमार सक्सैना**, ब्रज प्रदेश (94123852212)

## अनुभूति के झरोखे से

मम्मी हम पैदा क्यों होते हैं? एक बहुत छोटा-सा प्रश्न, पर चौका दिया उसने। क्या एक छोटा बच्चा इतना सब सोच सकता है। नाश्ता देकर उसे टाल दिया था मैंने उसके प्रश्न को! पर मैं गलत थी और आज के माँ बाप भी यही गलती दोहरा रहे हैं। असंख्य सवाल बच्चों के मन में आते हैं। कुछ कह पाते हैं, कुछ नहीं।

जीवन की रफ्तार में दौड़ रहे हैं, एक दूसरे से आगे निकलने के लिए। वक्त नहीं है किसी के पास समझने के लिए। इन बच्चों में विवेकानन्द, भगत सिंह, महाराणा प्रताप, मीराबाई मौजूद हैं लेकिन हम उन्हें भेज देते हैं कोचिंग संस्थानों में कैरियर बनाने के लिए। छोटे बच्चों की शंकाओं, उमड़ते प्रश्नों और उत्सुकताओं को समझने की आवश्यकता होती है। अपनी महत्वकांक्षाओं के लिए बच्चों को अंधी दौड़ में न भेंजे। देश केवल डॉक्टरों, इन्जीनियरों से नहीं चलता। त्यागी, मनीषी, विचारक, साहित्यकार, चिन्ताकें तथा अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री भी आवश्यक होते है।

गुड़गाँव के एक फ्लैट में मैं हूँ। पड़ोस वाली आंटी के चार लड़कियाँ, एक लड़का हैं। सब की शादी हो गई है। भगवान की लीला देखों 65 साल की आयु में सब काम खुद करती रहती हैं। घर का सामान ठीक करती रहती है। यह सब क्या है। वे इसके लिए स्वयं जिम्मेदार तो नहीं हैं। यदि समय रहते उन्होंने बहू को दायित्व सौंप दिया होता तो लड़का अलग रहने न जाता। ईश्वर हमें संकेत देता है। हम समझ नहीं पाते। मोहवश हम अनेक प्रकार के सामान जोड़ते रहते हैं, शायद वह समान मेरे बाद कभी खोलकर भी नहीं देखा जायेगा। यही सांसारिक मोह दुख का कारण है।

आइये जीवन के शाश्वत सत्य को अन्देखा न करें। बदल डालें अपने आपको, अपने परिवेश को। -**चंचल सक्सेना,अलवर**

## बधाई सोनी चौरसिया

काशी-वाराणसी की सोनी चौरसिया के द्वारा 124 घंटे लगातार नृत्य के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ड रिकार्ड में नाम दर्ज कराने के उपलक्ष्य में वरूणा शाखा द्वारा सम्मानित किया गया। संरक्षक रमेश लालवानी, प्रो. रजनीश शुक्ला, डॉ. वेनी माधव, डॉ. शिप्रा, वी.के. सिंह ने सोनी को सम्मानित किया।

# फिटकरी (Alum) के औषधीय एवं आयुर्वेदिक गुण

जो मनुष्य की काया 'फिट' करे उसे फिटकरी कहते हैं। यह लाल व सफेद दो प्रकार की होती है। अधिकतर सफेद फिटकरी का ही प्रयोग किया जाता है। यह संकोचक अर्थात् सिंकुड़न पैदा करने वाली होती है। फिटकरी एक प्रकार का खनिज है जो प्राकृतिक रूप में पत्थर की शक्ल में मिलता है।

**आज हम फिटकरी के कुछ गुणों के विषय में बात करेंगे।**

- चोट या घाव पर फिटकरी का पानी लगाने से आराम मिलता है। खून का बहना बंद हो जाता है।
- जिन लोगों को शरीर से ज्यादा पसीना आने की समस्या हो तो वे पानी में फिटकरी को घोलकर नहाने से पसीना आना कम हो जाता है एवं शरीर की खुजली और बदबू आना बंद हो जाता है।
- एंटीबैक्टीरियल और एस्ट्रिजेंट तत्व होने की वजह से यह दंत रोग को दूर करता है। यह माउथवॉस की तरह भी प्रयोग की जा सकती है।
- काली मिर्च के साथ फिटकरी को पीसकर दांतों की जड़ों में मलने से दांतो की दर्द में लाभ होता है।
- प्रतिदिन फिटकरी को गर्म पानी में घोलकर कुल्ला करें इससे दांतों के कीड़े तथा मुँह की बदबू दूर हो जाती है। 100 ग्राम फिटकरी के चूर्ण 50 ग्राम सैंधा नमक मिलाकर मंजन बना लें, इसके प्रतिदिन प्रयोग से दांतों के दर्द में आराम मिलता है।
- सर्दियों के समय में पानी में ज्यादा काम करने से हाथों की अंगुलियों में सूजन या खुजली हो जाती है। ऐसे में थोड़े पानी में फिटकरी डालकर उबाल लें। इस पानी द्वारा उंगलियों को धोने से आराम मिलता है।
- डेढ़ ग्राम फिटकरी पाउडर को फॉककर ऊपर से सादा या हल्दीयुक्त दूध पीने से चोट दर्द दूर होता है।
- टॉन्सिल की समस्या होने पर एक गिलास गर्म पानी में चुटकी भर फिटकरी, चुटकी भर हल्दी और एक चम्मच नमक डालकर गरारे करने से टॉन्सिल की समस्या से जल्दी आराम मिलता है।
- दस्त ओर पेचिस की परेशानी से बचने के लिए 1-2 चुटकी भुनी हुई फिटकरी को गुलाब जल के साथ मिलाकर पीने से खूनी दस्त आना बन्द हो जाता है।
- एक लीटर पानी में 10 ग्राम फिटकरी का चूर्ण घोल लें। इस घोल से प्रतिदिन सिर धोने से सिर के जुएँ मर जाते हैं।
- आधा ग्राम पिसी हुई फिटकरी को शहद में मिलाकर चाटने से दमा और खाँसी में बहुत लाभ मिलता है।
- गर्म तवे पर फुलाई हुई फिटकरी 10 ग्राम और 20 ग्राम मिश्री को मिलकार महीन पीसकर रख लें। करीब एक ग्राम मात्रा में नित्य सबेरे खाने से दमा रोग में लाभ होता है।
- कान में फुंसी अथवा मवाद हो तो फिटकरी के पानी की 2-4 बूँद कान में डालें काफी आराम मिलेगा।
- शहद में फिटकरी मिलकार काजल या सुरमा की भाँति आँखों में लगाने से लाली समाप्त हो जाती है।
- त्वचा में खुजली वाली जगह को फिटकरी वाले पानी से धोकर उस जगह पर सरसों के तेल लगा कर थोड़ा सा कपूर का चूर्ण डालें। इससे आराम मिलेगा।
- जननांगों में खुजली होने पर गर्म पानी में फिटकरी मिलाकर धोने से लाभ होता है।
- बिच्छू के डंक में भी 1तोला फिटकरी को 5 तोला गर्म पानी में मिलाकर रूई से डंक वाले स्थान बार-बार लगाने से दर्द दूर हो जाता है। - **सौजन्य से**

## पचपदरा ( राजस्थान पश्चिम )

शाखा ने परिषद् की दम्पति सदस्यता को प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रेषित किये हैं : 1. सदस्यता फार्म पर प्रति/पत्नी दोनों की सूचनाएँ अंकित की जाए। 2. रसीद पर दोनों का नाम अंकित किया जाए। 3. कार्यक्रमों में दोनों को समान महत्व दिया जाए। सुझाव स्वागतम योग्य है -**सम्पादक**

## नेत्रदान महादान

भारत के लगभग 1.25 करोड़ दृष्टिहीन लोगों में से केवल 30 लाख लोग ही दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि इसके लिए तंतुओ तथा पुतलियों का स्वस्थ होना आवश्यक है। नेत्रदान केवल मरणोपरान्त ही हो सकता है। नेत्रदान की वर्तमान अवस्था में 80 लाख मृतकों में से केवल 15000 नेत्रदान ही हो पाते हैं। इसका कारण नेत्र बैंकों का अभाव, नेत्रदान के बारे में अंधविश्वास तथा मृत्यु शोक के वातावरण में उपेक्षा ही महत्वपूर्ण है। भारत जैसे विशाल देश में जब हम सामाजिक आर्थिक, औद्योगिक क्षेत्रों में स्वाालंबन की ओर बढ़ रहे हैं, तो कार्निया की उपलब्धता में आत्म निर्भर क्यों नहीं हो सकते। हमारा निकटवर्ती देश श्रीलंका नेत्रों की उपलब्धता में आत्म निर्भर हैं वरन अन्य देशों में भी नेत्रदान उपलब्ध कराता है। कार्निमल प्रत्यारोपण से जुड़े तथ्य निम्न है:-

(1.) नेत्रदान में धर्म, आयु, ऑपरेशन आदि का कोई बन्धन नहीं है। (2.) एड्स, संक्रमण अथवा पुतलियों से संबंधित रोगी नेत्रदान नहीं कर सकते। (3.) दुर्घटना होने पर मृत्यु की अवस्था में परिजनों की सहमति लेकर नेत्रदान हो सकता है। (4.) नेत्र बैंक का शपथ पत्र, साक्ष्य परिजनों की सहमति लेकर पंजीकरण करना चाहिए। (5.) नेत्र बैंक से प्राप्त कार्ड अपने साथ रखें। (6.) निकटवर्ती नेत्र बैंक का पता, फोन आदि प्रदर्शित करना चाहिए।

**नेत्रदान के समय** (i) डॉक्टर को 10 cc रक्त जांच के लिए लेना (ii) मृतक की आँखों में आई ड्रॉप डालना (iii) आँखों पर गीली रुई रखें (iv) तेज रोशनी न रखें (v) सिर के नीचे तकिया रखें

डॉक्टर को नेत्रदान प्रक्रिया में 20 मिनट लगते है। दो कार्निया से 5-6 व्यक्तियों को रोशनी मिल सकती है।

सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि नगर के निकट स्थित नेत्र बैंक से सम्पर्क कर शपथ पत्र भरवाने का अभियान चलावें।

-**मनोज अवस्थी** (मो. 9891153495)

## पर्यावरण - एक बहुआयामी विषय

प्रचलित शब्दों में पर्यावरण से हमारा तात्पर्य वनस्पति जगत, सौर ताप, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, स्वच्छता आदि की जागरूकता से है। अधिसंख्य शाखाओं द्वारा वृक्षारोपण और तुलसी पौधों का वितरण कर पर्यावरण कार्यक्रमों की इतिश्री कर ली जाती है। संसार के विभिन्न देशों में प्रारंभिक शिक्षा में पर्यावरण आधारित जीवनशैली के विषयों का समावेश होने के कारण उन देशों के नागरिक पर्यावरण को जीवनशैली का अंग मानते हैं। हमारे देश में यह जीवनशैली का अंग न होने के कारण विशेष जागरूकता अभियान अथवा प्रदूषण के दुष्प्रभाव से ग्रसित होने पर पर्यावरण संरक्षण के बारे में तत्कालिक चिन्ता करने की परम्परा है।

जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए पर्यावरण संरक्षण आधारित जीवनशैली की आवश्यकता है। सिंचाई के लिए फव्वारा पद्धति, जल स्रोतों के किनारे प्रदूषण की रोकथाम, वायु में जहरीली गैस, धुआँ, पटाखें आदि को रोकने के उपायों को दैनिक व्यवहार में जोड़ने की आवश्यकता है। स्वच्छता और स्वास्थ्य परस्पर पूरक है। स्वच्छता पर जितना आग्रह होगा स्वास्थ्य उतना ही अच्छा रहेगा।

वर्तमान युग में तकनीकी के बढ़ते प्रयोग से सूचनाओं के भण्डार एक छोटी उपकरण में संग्रहित किये जाते है। अनेक कार्यालयों में कागज रहित व्यवस्थाओं का अनुपालन किया जा रहा है। इसके कारण कागज का घटता प्रयोग, कागज का पुनर्नवीकरण वृक्षों के कटाव को कम करने में सहायक है। पर्यावरण के विभिन्न आयामों के बारे में जागरूकता फैलाना तथा अपने जीवन में पालन करना हमारा संकल्प होना चाहिए। परिषद् की वेबसाइट पर पर्यावरण संबंधी बैनर, नारे, प्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराई गई है। इसका प्रयोग अधिकाधिक मात्र में किया जाए।

-**रमेश गोयल**, क्षेत्रीय मंत्री पर्यावरण

## महिला सशक्तिकरण पर विशेष

इस युग में महिला उद्यमी, प्रबन्धकों, बैकिंग क्षेत्रों में महिलाओं की सफलता की एक लम्बी श्रंखला मिलती है। महिला सशक्तिकरण के कुछ अनछूए प्रसंगों से आपकी मुलाकात कराते हैं नाम है वासामलू किस्की क्रिसीको। निवास अरुणाचल प्रदेश का लोहित जिला। गाँव में अफीम की अवैध खेती होती थी। इसी से गुजारा चलता था। बासामलू ने कुछ नया करने की ठानी। माँ का इलाज कराते समय उन्हें मिशाती नाम का विलक्षण चाय का पौधा मिला। यइ औषधि पड़ोस के जिले से मंगवानी पड़ती थी। वासामलू ने इसकी खेती शुरू की। इस जैविक चाय की माँग अब विदेशों में हो गई है। आज गाँव के लोग खुशहाल और आत्मनिर्भर हैं।

## LATEST BOOKS FOR COMPETITIONS

| | |
|---|---|
| 1. भारत को जानो ( संस्करण : 2016 ) | ₹25/* |
| 2. **Bharat Ko Jano (Edition: 2016)** | **₹25/-*** |
| 3. राष्ट्रीय चेतना के स्वर ( संस्करण : 2016 ) | ₹17/** |

***On order for 1000 or more books: ₹ 24/- each**

****On order for 200 or more books: ₹ 15/- each**

Please send your orders, along with your contribution, to the Central Office. Kindly make the Cheque / Demand Draft payable to '**Bharat Vikas Parishad Prakashan**'. The amount can also be deposited in Bharat Vikas Parishad Prakashan **account No. 90962010080664**, **RTGS or IFS code: SYNB0009096** of Syndicate Bank, Pitampura, Delhi – 110034. **-BVP Prakashan Vibhag**

### Building Brand Image of Bharat Vikas Parishad

For the sake of uniformity and building brand image of Bharat Vikas Parishad, Prant and Branch office bearers are requested to please follow the following guidelines:

1. The **name** of Bharat Vikas Parishad in English should always be written in upper-lower case and not all in capitals.
2. The **logo** of Bharat Vikas Parishad should always be printed in black; unless the whole page is being printed in different single colour.
3. The **letter masthead** of the Prant / Branch should always be in bhagwa / saffron colour.
4. Parishad's tagline **"स्वस्थ-समर्थ-संस्कारित भारत < >Swasth – Smarth – Sanaskarit Bharat**" should be extensively used.
5. The **national song** (Vande Mataram) should preferable be sung complete on the lines of the music available at the Parishad's website. It is downloadable from the web page : http://www.bvpindia.com/vande_text.html
6. While taking **oath**, one should simply stand in normal position.
7. Prants should use either the **email address** allotted by the Central Office or select their own email address and register it with the Central Office for communications with them.
8. All Prants should forward list of **Presidents / Secretaries / Treasurers of Branches**, along with their contact details (e.g. phone / mobile no. and email address) for displaying on the website so that persons desirous of joining BVP may know whom to contact.
9. For building a permanent up-dated directory of **Permanent Projects**, Prants / Branches are requested to forward one photograph of each of their projects, along with brief project detail, putting on the Parishad's website. -**Atam Dev**, Chairman Prakashan

## बुढ़ा तालाब बना विवेकानन्द सरोवर

नरेन्द्र को तैराकी का बड़ा शौक था। वकालत करते समय पिता विश्वनाथ दत्त जबलपुर होते हुए रायपुर पहुँचे। रायपुर के अनेक तालावों में बुढ़ा तालाब नरेन्द्र का प्रिय सरोवर था। वे तालाब में खूब तैरते थे। नगर के मध्य होने के कारण इस तालाब के पास शिव मंदिर स्थित है। इसी तालाब में तैराकी करते नरेन्द्र का शरीर बलिष्ठ बन गया था। तैराकी की इस अद्‌भूत प्रतिभा के कारण ही दिसम्बर 1892 में समुद्र की सीना चीर कर नरेन्द्र कन्याकुमारी से उस शिला तक तैरकर पहुँच सके, जहाँ आज विशाल विवेकानन्द शिला स्मारक बना है। छत्तीसगढ़ के रायपुर में बुढ़ा तालाब सरोवर को अब विवेकानन्द सरोवीर कहा जाता है। इसके मध्य टापू पर स्वामी जी की भव्य प्रतिमा स्थापित है।

## उतार-चढ़ाव

जिंदगी के उतार-चढ़ाव उस दिमागी खेल की तरह है जिसमें कभी हार होती है तो कभी जीत। यदि हम खेल को कुशलतापूर्वक और ध्यान से खेलते हैं तो विजय मिलती है और ध्यान चूकने पर हार का सामना करना पड़ता है। जिंदगी में परेशानियों और विपत्तियों का आगमन व्यक्ति को हताश कर देता है और उसके जीवन में अंधकार भर देता है। यकीनन किसी की अपनी योजनाओं और तौर-तरीकों में विश्वास की सच्ची परख तभी होती है जब उसके सामने क्षितिज अंधकारमय हो। मुश्किलों और विपत्तियों को जीवन से जोड़कर ही चलना चाहिए।

पाश्चात्य विद्वान एन. लैंडर्स का कहना है कि मुश्किलों को जीवन का अनिवार्य हिस्सा मानकर चलें और जब कोई मुश्किल आए तब अपना सिर ऊँचा उठाकर, उसकी आँख से आँख मिलाकर कहें-मैं तुमसे ज्यादा ताकतवर हूँ, तुम मुझे नहीं हरा सकती। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जिंदगी के उतार-चढ़ाव भी इस परिवर्तन का एक हिस्सा है। जिन्दगी के चढ़ाव या जीत को तो हर व्यक्ति प्रसन्ता से स्वीकार करता है, लेकिन उतार या हार को हर व्यक्ति सहन नहीं कर पाता। जबकि यह जीवन का नियम है कि दिन है तो रात है और जीत है तो हार है। जब हम अपनी सफलता का जश्न यह सोचकर मनाते हैं कि हमें हमारे संघर्ष और मेहनत का फल मिला है तो असफलता को भी यह सोचकर स्वीकार करना चाहिए कि हमारी मेहनत में कही कुछ कमी थी जो हम सफल नहीं हो पाए।

जब हम इतना बड़ा सत्य जानते हैं तो फिर बाधाओं और परेशानियों को जीवन का अंग मानकर क्यों नहीं चल सकते? यदि बाधाओं और परेशानियों को मन और मस्तिष्क से स्वीकार कर लिया जाए तो जीवन के उतार-चढ़ाव और दुख भी एक अद्‌भुत आनन्द प्रदान करते हैं। इससे जीवन भी कहीं अधिक आसान होगा। साहित्यकार राल्ड वाल्डो इमरसन जीवन के बारे में कहते हैं कि कभी न गिरने में हमारा महान गौरव नहीं है, बल्कि वह हर बार जब भी गिरें तब ऊपर उठने में है। जो व्यक्ति दुख और परेशानी को स्वीकार करने का साहस उत्पन्न कर लेते हैं, वे जीवन की बड़ी जंग भी जीत लेते हैं। -**रेनू सैनी**।

## कलाम को सलाम

दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से उत्तर पूर्वांचल क्षेत्र में श्री जीवनवर्धन शास्त्री वनवासियों में सेवा कार्य करते हैं। राष्ट्रपति ए.पी..जे.अम्बदुल कलाम के निधन के उपरान्त उनकी श्रद्धांजलि सभा में शास्त्री जी ने एक स्मरण सुनाया। भारत सरकार ने कुछ सांसदों, पत्रकारों और समाजसेवी, अधिकारियों का प्रतिनिधि मण्डल उत्तर पूर्वांचल की समस्याओं का अध्ययन करने को भेजा। यात्रा के बाद प्रतिनिधि मंडल ने अपनी ब्यौरा प्रस्तुत करने राष्ट्रपति भवन गया। राष्ट्रपति ने शास्त्री जी से कहा कि ये वरिष्ठ प्रशासनिक अधि कारी आकर्षक ब्यौरा बनाने में बहुत अनुभवी हैं। आपने यदि प्रचलित मान्यताओं के विपरित कुछ अनुभव किया हो तो बताएं। शास्त्री जी ने कहा कि मेघालय और नागालैण्ड में हरियाली, वनस्पति और वृक्ष तो बहुत है लेकिन वर्षा कम होती है। कलाम साहब ने कहा कि यह विरोधाभास तो है परन्तु सत्य है। इसका कारण मौसम वैज्ञानिक नही बता सकते। 5000 साल पहले भगवान श्रीकृष्ण इसका उत्तर गीता के तीसरे अध्याय के चौदहवें श्लोक में दिया है-

अन्नादं भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभव:।

रूज्ञाद भवति पर्जन्यो यज्ञ: कर्म समुदं भव:।।

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है। अन्न की उत्पति वृष्टि से होती है और वृष्टि यज्ञ विहित कर्मो से उत्पन्न होने वाला है। ऐसी थी महान् वैज्ञानिक कलाम की गीता के प्रति निष्ठा। - **दयानन्दन सेवाश्रम संघ**

## सारागढ़ी का महान ऐतिहासिक युद्ध ( वाहे गुरु दा खालसा वाहे गुरु दी फतह )

बात 1897 की है। उत्तर पश्चिम सीमान्त पर 12000 अफगानों ने हमला कर दिया। वे गुलिस्तान और लोखार्ट के किलों पर कब्जा करना चाहते थे। इन किलों को महाराजा रणजीत सिंह ने बनवाया था। सारागढ़ी की सुरक्षित चौकी इसके निकट थी जहाँ सिख रेजिमेंट के 21 जवान तैनात थे। ईश्वर सिंह के नेतृत्व में सभी जवान जानते थे कि लड़ाई होने पर बचना नामुमकिन है। फिर भी 12 सित्मबर, 1897 को सिखलैड की धरती पर एक ऐसी लड़ाई हुई जो संसार की 5 सबसे प्रमुख लड़ाईयों में शामिल हैं 12000 हजार अफगान और 21 सिख सैनिकों का भीषण युद्ध हुआ। लगभग 1400 अफगान सैनिक मारे गये। भारी तबाही हुई। किले बच गये। अफगानों की हार हुई। यूरोप के संसद में सभी 21 जवानों को मरणोपरान्त इण्डियन ऑर्डर ऑफ मेरिट दिया गया। ये लड़ाई यूरोप के स्कूलों में पढ़ाई जाती है। दुख होता है हमारे नौजवान इस युद्ध के बारे में अनजान है।

## आया मौसम गर्मी, लू का.....

गर्मी का महीना आ गया है और सूरज अपनी प्रखर किरणों की तीव्रता से संसार के जलियांस (स्नेह) को सुखा कर वायु में रूखापन और ताप बढ़ा कर मानव के शरीर के ताप को भी बढ़ा रहा है।

गर्मी में लापरवाही के कारण शरीर में निर्जलीकरण (dehydration) लू लगना, चक्कर आना, घबराहट होना, उल्टी-दस्त, sun-burn घमोरिया जैसी कई diseases हो जाती हैं।

**इन बीमारियों के होने में प्रमुख कारण :-**

- गर्मी के मौसम में खुले शरीर, नंगे सर, नंगे पाँव धूप में चलना
- तेज गर्मी में घर से खाली पेट या प्यासा बाहर जाना
- कूलर या ए.सी. से निकल कर तुरन्त धूप में जाना
- धूप से आकर तुरन्त ठंडा पानी पीना, सीधे कूलर या ए.सी. में बैठना
- तेज मिर्च-मसाले, बहुत गर्म खाना, चाय, शराब इत्यादि का सेवन ज्यादा करना
- सूती और ढ़ीले कपड़ों की जगह सिंथेटिक और कसे हुए कपड़े पहनना

**हम कुछ छोटी-छोटी किन्तु महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रख कर इन सबसे बचे रह कर, गर्मी का आनन्द ले सकते हैं:**

- ♦ गर्मी में मधुर (मीठा, शीतल द्रव तथा इस्निगधा खान-पान हितकर होता है।
- ♦ गर्मी में जब भी घर से निकले, कुछ खा कर या पानी पी कर ही निकलें, खाली पेट नहीं
- ♦ गर्मी में ज्यादा भारी, बासा भोजन नहीं करें, क्योंकि गर्मी में शरीर की जठराग्नि मंद रहती है।, इसलिए वह भारी खाना पूरी तरह पचा नहीं पाती और जरूरत से ज्यादा खाने या भारी खाना खाने से उलटी-दस्त की शिकायत हो सकती है।
- ♦ गर्मी में सूती और हलके रंग का कपड़ा पहनने चाहिए।
- ♦ चेहरा और सर रूमाल या साफी से ढक कर निकलना चाहिए।
- ♦ प्याज का सेवन तथा जेब में प्याज रखनाा चाहिए
- ♦ बाजारू ठंडी चीजे नहीं बल्कि आम (केरी) का पना, खस, चन्दन, गुलाब, फालसा, संतरा का शर्बत, ठंडई, सतू, दही की लस्सी, मट्ठा, गुलकंद का सेवन करना चाहिए।
- ♦ इसके अलावां लौकी, ककड़ी, खीरा, तोरी, पालक, पुदीना, नीबू, तरबूज आदि का सेवन अधिक करना चाहिए।
- ♦ शीतल पानी का सेवन 2 से 3 लीटर रोजाना
- ♦ अगर आप योग के जानकार हैं, तो सीत्कारी, शीतली तथा चन्द्रभेदन प्राणायाम एवं श्वासन का अभ्यास शरीर में शीतलता का संचार करते हैं।

- **डॉ. नीरज यादव** (बारां)

## जबलपुर महाकौशल (युवा सम्मेलन)

भारत विकास परिषद् जबलपुर में विशाल युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। 700-800 युवाओं को संबोधित करते हुए विचारक संजय जोशी ने अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को स्थान देने का आह्वान किया। राष्ट्र धर्म के भाव से प्रेरित होकर देश के लिए अपने योगदान का विचार करना चाहिए। समन्वय सेवा ट्रस्ट सभागार में देश की समस्याओं का मूल कारण राष्ट्रभक्ति की कमी को बताया। लोग अपना घर साफ रखते हैं लेकिन सड़क साफ रखने की जिम्मेदारी निगम पर डालते हैं। देश भक्ति के अभाव में देश विरोध ी लोग विघटनकारियों का समर्थन करते हैं। अफजल गुरु के फाँसी को बलिदान कहने वाले, जे.एन.यू. के छात्रों को वामपंथी दलो और कांग्रेस का समर्थन देशद्रोहियों के समर्थन है। देश की आजादी के बाद से कांग्रेस ने अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के नाम पर नफरत के बीज बोये हैं। महापौर स्वाति गोडबोले ने कहा युवाओं की प्राथमिकता देशभक्ति होनी चाहिए। देश के लिए तन, मन, धन अर्पण करने की लालसा से ही देश उन्नति करेगा। श्री विद्याधर मतेले ने परिषद् का जानकारी दी। निशिकान्त चौधरी ने अध्यक्षता की।

## राजस्थान उत्तर

**प्रताप श्रीगंगानगर :** शाखा द्वारा बस स्टैण्ड, स्वास्थ्य केन्द्र और राजकीय विद्यालय आदि में स्थायी रूप से जल मंदिर का संचालन किया जा रहा है। रेल यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे प्लैटफर्म पर स्थायी जल मंदिर की स्थापना की गई। स्थापना के समय रेलवे इजिंनीयर पिल्लू राम, स्टेशन मास्टर रमेश शर्मा उपस्थित रहे। अध्यक्ष नरेश चमड़िया के साथ सभी सदस्यों ने सहयोग किया।

**पैसा आपका है लेकिन संसाधन समाज के हैं-**

दोस्तों! देश तब महान् बनता है जब उसके नागरिक महान् होते हैं। हर वह छोटा काम करना जिससे देश मजबूत बनता है। खाने की बर्वादी रोकना, पानी का अपव्यय रोकना, बिजली को बेकार न करना।

हैम्बर्ग शहर के एक रेस्तरां में अपने मित्र के साथ उद्योगपति रतन टाटा ने प्रवेश किया। अधिकांश टेबल खाली थे। एक मेज पर एक नौजवान युगल दो डिश दो वियर लेकर बैठा था। मैंने सोचा क्या यह साधारण खाना रोमान्टिक हो सकता है। एक टेबल पर कुछ बुजुर्ग महिलाएँ बैठी थीं। जब कोई डिश सर्व की जाती हो वेटर सभी लोगों की प्लेट से खाना निकाल लेता। वे औरतें प्लेट का सब खाना खत्म कर देती।

चूकि हम भूखे थे तो कई डिश मंगाई। कुछ खाई एक तिहाई खाना छूट गया। हमने पैसे चुका दिये। वे औरते हमारे खाना छोड़ने से नाराज थीं। मेरे मित्र ने तर्क दिया हमने पैसे चुका दिया है। मैं खाना खाऊँ या छोड़ूं। औरते गुस्से में आ गई। उन्होंने फोन पर शिकायत कीं। कुछ देर में सामाजिक सुरक्षा संगठन के अधि कारी पहुँच गये। उसने 50 यूरो का दंड लगा दिया। ऑफीसर कठोर शब्दों में बोला आप उतना ही खाना लीजिए जितना उपयोग कर सकें। बेशक पैसे आपके है लेकिन संसाधन समाज के है। आपको संसाधनों को बर्वाद करने का कोई अधिकार नहीं है। हमें खाने की आदतों को बदलने की आवश्यकता है।

## राजस्थान दक्षिण पूर्व

**रावतभाटा :** शाखा द्वारा नव वर्ष समारोह में चौराहे को प्रकाशित किया गया। प्रभात फेरी निकाली गई। योगाचार्य सुदर्शन सिंह ने योग प्रशिक्षण किया। स्टीकर, झण्डे तथा शुभकामना पत्रक बांटे गये। सुनेल शाखा द्वारा नीम शर्बत का वितरण किया गया।

**बारां :** शाखा द्वारा गर्मी के मौसम में 20 परिनडे पक्षियों के लिए तथा एक प्याऊ का शुभारम्भ किया गया। व्यवस्था गिर्राज माहेश्वरी ने की।

## राजस्थान मध्य

**सुभाष-भीलवाड़ा :** शाखा द्वारा नव वर्ष अभिनन्दन कार्यक्रम में शिवाजी गार्डेन में रंगाली सजाई गई तथा 1500 दीपों और ठंडाई से नव वर्ष मनाया गया। समूहगान प्रतियोगिता के लिए सम्मानित किया गया।

**युवा अजमेर :** गर्मी के मौसम में पक्षियों को जल उपलब्ध कराने के लिए 101 परिण्डे लगाये गये। संरक्षक श्री शान्तिलाल पनगड़िया ने कहा कि परिषद् के द्वारा समाज के अन्तिम व्यक्ति को सहायता देना का काम करना है। इस अवसर पर 22 नये सदस्यों को परिषद् परिवार में जोड़ा गया।

## राजस्थान पश्चिम

**जोधपुर मारवाड़ :** शाखा ने नवप वर्ष धूमधाम से मनाया। बैनर, प्रसाद वितरण, तिलक, चन्दन लगाकर सभी को शुभकामनाएँ दी गई। इसमें नन्दनवन शाखा के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

**दुर्गादास राठौर (बाड़मेर) :** शाखा ने बाड़मेर के पांचवत्ती चौराहे पर दीप जलाकर रोशनी की। नगर के चौराहे पर आकर्षक रंगोली सजाई गई। सदस्यों ने नगरवासियों को तिलक चन्दन लगाकर नव वर्ष की बधाई दी। जिला कलेक्टर ओम प्रकाश विश्नोई ने नव वर्ष शुभकामना पर हर्ष जताया। रेनू गौड़, शकुन्तला मेहता सहित सदस्यों ने उत्साह से भाग लिया।

## राजस्थान दक्षिण

**भामाशाह-उदयपुर :** शाखा द्वारा जैन मंदिर के पास प्याऊ तथा पशुओं के लिए जल कुडी स्थापित की गई।

**बांसवाड़ा :** शाखा द्वारा सर्राफ कम्पलेक्स में तिलक मिश्री से नव वर्ष अभिनन्दन किया गया। अध्यक्ष डॉ. एम.जी. सिंह ने वरूण पूजा तथा दीपदान किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं

आतिशबाजी का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया।

**मेवाड़-उदयपुर :** शाखा द्वारा वरिष्ठ नागरिकों एवं महिलाओं का सम्मान किया गया। प्याऊ लगाकर सेवा प्रकल्प दसंचालित किया गया। पगड़ी सजाओ प्रतियोगिता आलोक संस्थान के साथ सम्पन्न हुई।

## मुंडेर का कौआ

आज कजरी तीज के दिन बोझिल मन से पारो नहाकर नाश्ता बनाने हेतु रसोई घर में प्रवेश कर ही रही थी कि मुंडेर पर बैठे कौवे की 'काँव-काँव' ने उसे प्रफूल्लित कर दिया। लगता है आज उन्होंने (पति) आने का मन बनाया है। शाम की पूजा के समय अवश्य आ जायेंगे! पारो ने सोचा। सास-श्वसुर दो ननद, तीन देवर को खाना खिलाकर वह पूजा की तैयारी में लीन हो गई। लाल साड़ी, ब्लाउज, नथ, पायजेब, भर पैर महावर, कंगन तथा हार पहन कर पूजा की तैयारी के साथ-साथ पति की प्रतिक्षा वह विहालता के साथ करने लगी। किन्तु रात्रि के ग्यारह बज गए। श्रंगार के साथ ही पति आगमन की आस फीकी पड़ गई। उदास पारो कहने लगी-ये मुवे कौवे भी बिना जाने समझे मुंडेर पर काँव-काँव करने लगते हैं। आज सुबह से मेरा जीना हराम कर दिया। समय काटे नहीं कट रहा था। अब अगर कोई कौवा कभी मेरी मुंडेर पर काँव-काँव किया तो ईट मार कर उड़ा दूँगी क्योंकि अब मुंडेर का कौवा भी मानव की तरह सच नहीं बोलता

**-डॉ. चम्पा श्रीवास्तव**

## पश्चिमी उत्तर प्रदेश

**वैशाली गाजियाबाद :** शाखा द्वारा होली मिलन में महिलाओं द्वारा व्यंग, भजन और गीतों का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सोनिया सिंह ने 'मोपे डारो हरे रंग आज होरी में' गाया और तालियाँ बटोरी। अनुपमा, मीनू, राखी, पंकजा त्यागी, मनोज अवस्थी ने व्यवस्था सम्भाली।

**साहिबाबाद : साधुवाद एवं प्रेरणादायी!** प्रान्त की साहिबाबाद शाखा के द्वारा पारिवारिक टीम भावना एवं सतत प्रयत्नों ने स्थायी प्रकल्पों एवं कार्यक्रमों के कीर्तिमान स्थापित किये हैं - (1.) स्वर्गयान, (2.) पेय जल की ट्रॉली, (3.) सरकारी स्कूलों में आर.ओ., (4.) स्कूलों मे जल पुर्नभरण, (5.)होम्योपैथिक चिकित्सालय, (6.) नि:शुल्क विकलांग, नेत्र, श्रवण परीक्षण, (7.) गरीब बच्चों की नि:शुल्क कोचिंग, (8.) गरीब बच्चों को छात्रवृत्ति (6000), (9.) गोपाल धाम में सहयोग रुपये 30000/-, (10.) स्वास्थ्य परीक्षण (मासिक), (11.) नव वर्ष मेले का तीन दिन आयोजन (15000 दर्शक)।

**पिलखुआ : वाह पिलखुआ!** शाखा ने बेटी बचाओ अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक मैटरनिटी हॉस्पिटल में कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए होर्डिंग लगाये गये। माताओं को जागरूक करके परिवारजनों को कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में पत्रक बांटे गये।

## गौरैया संरक्षण

**जनहित में प्रकाशनार्थ समाचार**

पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। अनेक जीवजन्तु लुप्त प्राय हो रहे हैं यह चिन्ता का विषय है। सीमेंट और कंक्रीट के विशाल जंगल खड़े हो रहे हैं और परम्परागत आवास नष्ट हो रहे हैं जीवों का जीवन संकट में है। लुप्त हो रहे पक्षियों में कोयल, गौरैया, चील, कौआ, सारस और राष्ट्रीय पक्षी मोर भी शामिल हैं। अनुकूल वातावरण के अभाव में जो गौरेया कभी घरों की शोभा थीं और उषा काल में अपनी चहचहाहट से प्रभाती गायन की ध्वनि उच्चारित करती थी। वह अब देखने को नहीं मिल रही है। घरों में उत्पन्न होने वाले कीटाणु गौरैया के भोजन थे। वातावरण की स्वच्छता में इसका बड़ा योगदान है।

पर्यावरण प्रेमी तथा जागरूक लोगों का ध्यान इस ओर गया है। यह संतोष की बात है। भारत विकास परिषद् (संस्कार) जसवन्तनगर ने गौरैया संरक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया हैं परिषद् के स्थानीय संरक्षक श्री नारायण चौधरी के निर्देशन में स्थानीय स्नेहकुंज में गौरैया के लिए स्वच्छ जल तथा चावल और गेहूँ के दलिया का आहार प्रतिदिन सुबह-शाम डाला जाता है। गौरैया के झुण्ड पेड़ों पर घोसला बनाकर रह रहे है। उनके निवास के अनुकूल वातावरण प्रदान किया जा रहा है। प्रात:काल उनके पीने के लिए रखे बर्तन में उनकी जल क्रीड़ा देखते ही बनती है। आइये हम सब मिलकर ऐसे वातावरण का सृजन करें, जिससे गौरेया तथा अन्य पक्षियों का संरक्षण हो सके।

- **विजय चौधरी** (जसवन्तनगर)

## उत्तराखण्ड पश्चिम

**क्लेमेंट टाउन :** शाखा द्वारा होली मिलन पर शास्त्रीय नृत्य एवं संगीतमय कार्यक्रम हुआ। महिला सदस्यों ने होली गीत गाये। बच्चों और महिला सदस्यों का श्रीमती सविता कपूर ने उत्साह वध न किया।

**रुड़की :** शाखा द्वारा अविरल गंगा कार्यक्रम के अन्तर्गत गंगा के घाटों पर गंगा आरती और भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन गायक राजेश अरोड़ा के भजनों पर मंत्र मुग्ध होकर श्रोताओं ने आनन्द लिया। डॉ. संगीता सिंह, साक्षी त्यागी, सुगंधा जैन ने भजन संध्या की व्यवस्था की। अविरल गंगा के अन्तर्गत घाटों की सफाई की गई।

## उत्तराखण्ड पूर्व

**सितारगंज :** शाखा द्वारा स्कूल की व्यवस्था के लिए फर्नीचर, दरी प्रदान की गई। तीन दिनों का नेत्र ऑपरेशन शिविर सम्पन्न किया गया। नव वर्ष पर 2073 दीपों को प्रकाशित किया गया।

## हस्तिनापुर

**मुजफ्फरनगर अमेटी :** शाखा द्वारा प्रतिदिन गऊ माता सेवा के साथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत के बैनर शहर में लगाये गये। सदस्यों ने होली मिलन का आनन्द लिया।

**मंजरी-मुजफ्फरनगर :** शाखा द्वारा कीर्तन भवन में कीर्तन का आयोजन किया गया। इसमें हरे राम हरे कृष्ण मंडल की सहभागिता रही। शिव मंदिर में जलाभिषेक हुआ। सोनिया, प्रिया, विक्कती, रिंक्कू आदि ने नृत्य तथा भजन गाकर धमाल किया। अन्त में भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया गया। फूलों की होली खेली गई। श्रीमती प्रिया सिंह ने बच्चों को नृत्य, भजन गायन, कपल गेम खिलाये गये। होली प्रिंसेज, होली क्वीन, होली किंग का चयन हुआ। सोनिया, राशि, स्वर्णलता, रीता, गरिमा, मोनिका ने कार्यक्रम को आकर्षक बनाया।

**संकल्प मुजफ्फरनगर :** शाखा द्वारा श्री कृष्ण गौशाला पचेन्द्र रोड के लिए गऊ सेवा के लिए वार्षिक उपयोग के लिए चारा, चोकर, खली आदि की व्यवस्था की गई कुल राशि 1.5 लाख रुपयें 275 मरीजों का नि:शुल्क मधुमेह परीक्षण कराया गया। टाऊन हाल रोड पर ठंडे पानी का प्याऊ लगाया गया।

**सम्राट-मुजफ्फरनगर :** शाखा द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में परिवार कल्याण पर श्रीमती सोनिया, शशि सिंघल और प्रभा अग्रवाल ने संस्कारों के प्रति सचेत रहने का आह्वान कियां वरिष्ठजनों के प्रति हमारा व्यवहार संसरित रहे तथा उनकों भावनात्मक सहयोग प्रदान किया जाए। मुख्य अतिथि गीता जैन ने बच्चों को मोबाइल के प्रति बढ़ रही समस्याओं का जिक्र किया। भाइचारे का घटता स्वरूप पर उन्होंने चिन्ता प्रकट की। उन्होंने बच्चों की पहली गुरु के रूप में माँ को स्थान दिया।

## रुहेलखण्ड

**मैत्री मुरादाबाद :** शाखा द्वारा बुद्ध विहार ब्रह्माश्रम में बुजुर्गों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया। आश्रम को फर्नीचर प्रदान किया गया। अध्यक्ष राजेश भारतीय, महिला संयोजिका रश्मि अग्रवाल ने प्रमुख भूमिका निभायी। आश्रम के निवासी तथा संचालक ने आभार किया।

## अवध प्रदेश

**परमहंस-लखनऊ :** शाखा द्वारा आयोजित होली मिलन में सौरभ तिलकधारी ग्रुप ने झाकियाँ प्रस्तुत की। फूलों की होली खेली गई।

**महिला शाखा-लखनऊ :** महिला सहभागिता को प्रभावी बनाने के लिए लखनऊ में 45 महिला सदस्यों की शाखा गठन हुआ। केचन अग्रवाल ने शाखा गठन के लिए सक्रिय प्रयास किये।

**सीतापुर :** शाखा द्वारा स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत नगर की स्वच्छता का जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। अभियान में नागरिकों ने भी सहभागिता की। स्थानीय पार्क में होली मिलन कार्यक्रम में सदस्यों ने सपरिवार सहभागिता की। शहर के 10 स्थानों पर बैनर लगाकर नव वर्ष का अभिनन्दन किया गया।

**बढ़े चलो नौजवान**

बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो नौजवान,
कदमों तले धरती नापो, बढ़ के छूलो आसमां

जिन्दगी बस कर्म मांगे, रगो में खून गर्म मांगे,
झूठे से शर्म मांगे, सत्य का आचरण मांगे,
जीवन अर्पण कर दो अपना, मानवता के नाम,
राह में उगे खारों से, देश के गद्दारों से
झूठे और मक्कारो से, बांटती दीवारों से
देश को बचाना ही हो, तेरा पहला काम
बढ़े चलो, बढ़े चलो.....

सबके लिए छाँव हो, सबके लिए धूप हो,
शहर हो या गाँव हो, खाने को अन्न खुब हो
सबको अवसर, सबको न्याय, लक्ष्य हो प्रधान
बढ़े चलो बढ़े चलो.....

देश की शान तुम, देश की आन तुम
भविष्य-वर्तमान तुम, तुम गूंजती तान तुम
अनेकता में एकता, तेरा बल तेरी शान
बढ़े चलो बढ़े चलो.....

-मोहन वैद, जम्मू

## प्रयाग

**प्रयाग :** नव वर्ष अभिनन्दन समारोह में न्यायमूर्ति सुधीर नारायाण ने परिषद् के समाजोत्थान कार्यक्रमों की सराहना करते हुए भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का उल्लेख किया। नैतिक मूल्यों की रक्षक एवं मानवतावादी भारतीय संस्कृति के शुभ नव वर्ष दिवस पर श्री नारायण ने तेजश्विनी, त्रिवेणी संस्कार एवं स्वर्णिम शाखा के पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। आचार्य शान्तनु महाराज ने नव वर्ष की महत्ता बताते हुए धर्म एवं अध्यात्म के महत्व पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अजय दत्ता ने परिषद् की प्रभावी भूमिका के लिए शाखा विस्तार की कार्य योजना बनाने

का निर्देश दिया। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. राजेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव एवं श्री मुकेश जैन उपस्थित रहे।

## काशी प्रदेश

**आजमगढ़ :** शाखा द्वारा मऊ तथा आजमगढ़ शाखाओं में होली मिलन सम्पन्न हुआ। विवेकानन्द पार्क में बाउन्ड्री तथा घाट की सीढ़ी का निर्माण कराया गया।

**शिवम् वाराणसी :** शाखा द्वारा विवेकानन्द जयन्ती तथा वसंतोत्सव पर रंगारंग कार्यक्रम किये गये। सुमन अग्निहोत्री, नीलू दीक्षित, गीता गुप्ता ने सहयोग किया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी तथा गेम खेले गये।

**गंगा मीरजापुर :** शाखा द्वारा गर्मी से राहत पहुँचाने के लिए बाजार तथा खुले में चलने वाले राहगीरों को गमछा वितरण किया गया। शाखा सदस्यों ने उत्साह से भाग लिया।

### ईश्वर जो करता है, अच्छा करता है।

किसी स्थान पर मोहन व राकेश नामक दो घनिष्ठ मित्र रहते थे। मोहन प्रकृति के नियमों की सराहना करता था। राकेश सदा ईश्वर को कोसता रहता था। एक बार दोनों मित्र खेत के बीचो बीच घूम रहे थे। राकेश ने खेत में लगे बड़े-बड़े तरबूज देखे। वह बोला इतनी पतली सी बेल पर इतने बड़े आकार के फल शोभा नहीं देते। यह ईश्वर का कैसा न्याय है। ये तो बड़ा पेड़ पर लगना चाहिए। मोहन ने बात अनसुनी कर दी। दोनों मित्र विश्राम के लिए आम के वृक्ष के नीचे जा बैठे। वायु चलने से एक आम राकेश के सिर पर आ पड़ा। वह पीड़ा से कराह उठा। मोहन ने उसे समझाया कि यह आम के स्थान पर तरबूज उसके सिर पर गिरता तो क्या होता? राकेश ने अपनी भूल स्वीकार कर ली तथा बोला ईश्वर जो करता है, अच्छा करता है।

**-धर्मेन्द्र**

## ब्रह्मावर्त

**किदवई नगर-कानपुर :** शाखा द्वारा बैनर लगाकर नव वर्ष अभिनन्दन किया गया। श्री अर्जुन दास खत्री मुख्य अतिथि ने परिषद् प्रकल्पों की प्रशंसा की।

**कन्नौज :** शाखा द्वारा प्रतिवर्ष सामूहिक सरल विवाह आयोजन के क्रम में नव रात्रि को न 9 निर्धन कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराया। सभी जोड़ों को उपजिलाधिकारी तथा डिप्टी पुलिस अधीक्षक ने आशीर्वाद दिया। समारोह में नव दुर्गा मंदिर तथा नगर के समाजसेवी उपस्थित रहे। महावीर जयन्ती पर शोभा यात्रा में शीतल जल तथा जूस की व्यवस्था की गई।

## ब्रज प्रदेश

**सुन्दरम अलीगढ़ :** शाखा द्वारा नववर्ष पर दीपदान, भजन संध्या, रंगोली आदि मंदिर में सम्पन्न किये गये। संयुक्त शाखाओं के द्वारा हनुमान जयन्ती, महावीर जयन्ती, वैशाखी, डॉ. अम्बेडकर जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

## दिल्ली उत्तर

प्रदेश के वार्षिक सहयोग में केन्द्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने परिषद् के होली मिलन तथा वार्षिक समारोह में परिषद् के सेवा कार्यों की भरपूर तारीफ की। उन्होंने भारतीय संस्कृति के विकास में संस्कार कार्यों के लिए परिषद् के प्रकल्पों की सराहना की। मेयर विजेन्द्र गुप्ता ने वार्षिक कार्यों के लिए पुरस्कार बांटें। संरक्षक भूपेन्द्र मोहन भण्डारी सहित प्रान्तीय एवं केन्द्रीय पदाधिकारी ने सहभागिता की। संजीव मिगलानी ने आभार किया।

## हिमाल प्रदेश पश्चिम

**पालमपुर :** शाखा द्वारा स्वच्छता अभियान को गति देने के लिए नगर में स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत उपस्थित रहे। दिव्य हिमाचल समूह के सम्पादक अनिल सोनी को परिषद् की जानकारी दी गई।

## पंजाब उत्तर

**मुकेरियां :** हाजीपुर शाखा द्वारा जल संरक्षण और जल उपयोगिता पर गाँवों में अभियान चलाकर चौपाल, स्कूल, कॉलेज, मंदिरों पर जल के महत्व को बताया जा रहा हैं प्रिंसिपल जोगेन्द्र सिंह ने बताया 2050 तक संसार में पीने योग्य जल की कमी हो जाएगी। लातूर में पानी की कमी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि अब घरों में नहीं टंकी में ताले पड़ने लगेंगे। सभी ने पानी बचाने की शपथ ली। व्यास नदी के तट पर स्थित हंदवाल स्कूल में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान चलाया गया। कवियित्री तृप्ता कौशल ने विषय की विस्तृत चर्चा की। सृष्टि के विकास और पोषण का मूल आधार नारी है। नारी सुरक्षित तो भविष्य सुरक्षित रहेगा।

**समर्पण जालंधर :** शाखा द्वारा पहला कदम स्कूल के बच्चों को स्टेशनरी वितरित की गई।

## पंजाब दक्षिण

**कोटकपूरा :** शाखा द्वारा गरीब असहाय महिलाओं को 20 सिलाई मशीन बांटी गई। समारोह में कुलतार सिंह बराड़, चेयरमैन तथा जयपाल गर्ग उपस्थित रहे।

**अबोहर :** शाखा द्वारा बस स्टेण्ड पर 15 साल पुराने वाटर कूलर को हटा कर नया कूलर लगाया गया।

## हरियाणा पश्चिम

**डबवाली :** शाखा द्वारा सिविल हस्पताल में शुद्ध पानी हेतु

आर.ओ मशीन और कूलर स्थापित किया गया। अस्पताल में मरीजों को चाय, नाश्ता पिछले पाँच सालों से दिया जा रहा है। मरीजों को प्राप्त सुविधाओं के लिए प्रधान कालूराम मेहता, संघचालक श्री वीरभान, डॉ. इन्दिरा अरोड़ा ने तारीफ की।

**फतेहाबाद :** शाखा द्वारा नव वर्ष पर मंत्रोच्चारण के साथ नव वर्ष का महत्व बताया गया। शाखा अध्यक्ष राकेश मेहता के साथ सदस्य सपरिवार उपस्थित रहे।

**रतिया :** शाखा द्वारा विकलांगों को ट्राईसाइकिल वितरण तथा हवन द्वारा सत्र शुभारंभ हुआ।

## हरियाणा उत्तर

**बरसत :** शाखा द्वारा 5 गरीब कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराया गया। सभी जोड़ों को घर गृहस्थी की आवश्यक सामग्री, वस्तुएं भेंट की गई। सतीश सैनी, शैलेश सेठी ने व्यवस्था में सहयोग किया।

**अम्बाला :** शाखा द्वारा 15 विद्यालयों में भारतीय नव वर्ष मनाया गया। वैदिक हवन यज्ञ किया गया। परिषद् भवन पर रोशनी की गई। सुनील गुप्ता अध्यक्ष की टीम को शपथ दिलाई गई।

**दयानन्द अम्बाला :** शाखा द्वारा 23 निर्धन कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया गया। मेहदी की रसम श्री कृष्ण गोधाम में रसिक श्री साहिल शर्मा के भजनोंपरान्त सम्पन की गई। राधेकृष्ण मंदिर में जयमाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मंत्रोच्चारण एवं फरे लेने के उपरान्त नव दम्पति ने भ्रूण हत्या न करने की शपथ ली। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अजय दत्ता ने सरल विवाह को केन्द्रीय प्रकल्प के अन्तर्गत सभी शाखाओं द्वारा सम्पन्न करने का आग्रह किया गया। संरक्षक प्रदीप गोयल, विवेक गुप्ता, दीपक राय ने भाग लिया।

**रादौर :** शाखा द्वारा 11 निर्धन कन्याओं का विवाह कराया गया। शाखा ने पिछले 11 सालों में 165 कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराया है।

**सूरज पंचकुला :** शाखा द्वारा नव वर्ष पर शुभकामनाओं का आदान प्रदान बैनर आदि विभिन्न पार्कों, चौराहों, स्कूलों तथा भवनों पर लगाये गये। सेक्टर 20-21 में यज्ञ आयोजन किया गया। दो राहा लुधियाना पर स्थित वृद्धाश्रम का सदस्यों द्वारा भ्रमण किया गया। सदस्यों ने वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव बांटे तथा उनके जीवन के प्रसंग सुने।

**सीवन :** शाखा की महिला सदस्यों द्वारा विशाल सुन्दरकांड पाठ का आयोजन किया गया।

## कोशी बिहार

**महर्षि अरविन्द व भारती मण्डल :** शाखाओं के संयुक्त तत्वावधान में नव वर्ष कार्यक्रम मनाया गया। 2000 दीप बांटे गये। बड़ी दुर्गा मंदिर पर महाआरती तथा महाप्रसाद का वितरण किया गया 500 लोगों ने भाग लिया।

## गुजरात मध्य

**पाटन-अहमदाबाद :** शाखा द्वारा आयोजित वार्षिक समारोह में डॉ. दिनेशभाई पन्टर तथा अश्विनी भाई पारीक ने श्रोताओं को प्रेरक विचार प्रस्तुत किये। सदस्यों ने सेवा कार्यों में बढ़ोतरी का निश्चय किया।

### अपना दीप आप बनो

उस समय की बात है। तब महात्मा बुद्ध-मृत्यु-शैया पर पड़े थे। उनका प्रिय शिष्य आनंद पास बैठा उनकी सेवा कर रहा था। तभी भद्रक नाम का एक दूसरा शिष्य वहाँ आया। वह रो रहा था। उसके रोने की आवाज बुद्ध के कानो में पड़ी। उन्होंने पूछा-आनंद कौन रो रहा है? आनंद ने कहा भद्रक आपके दर्शन करने आया है। भ्रद्रक पास आया और उनके चरणों में गिरकर रोने लगा। बुद्ध ने उससे पूछा-क्यों रो रहे हो भद्रक?। भद्रक बोला जब आप हमारे बीच नहीं रहोगे तो हमें प्रकाश कौन दिखाएगा? मैं यही सोचकर रो रहा हूँ। बुद्ध ने कहा भद्रक प्रकाश तो तुम्हारे अन्दर है उसे बाहर ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं है, जो उसे बाहर खोजत है। वे अन्त में निराश होता हैं। तुम अपना दीप आप बनो, मन वचन और कर्म से लोगों की सेवा करो - **सचिन कुमार**

## महाराष्ट्र-1

**मुम्बई सेन्ट्रल :** शाखा द्वारा 'जल ही जीवन है' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संयोजिका विद्या उत्तम शाह ने पर्यावरण जागरूकता के लिए जल के महत्व को रेखांकित करने वाले महत्वपूर्ण प्रकल्प बताया। विजेता बच्चों को मिठाई तथा पारितोषिक दिये गये।

**भाईंदर :** मुम्बई के काशीमीरा में आदिवासी विद्यार्थियों की पाठशाला का लोकार्पण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सम्पन्न हुआ था। विद्यालय का भवन जर्जर अवस्था में है। 1946 में स्थापित स्कूल आदिवासी सेवा मंडल ने स्थापित किया था। विद्यालय में लगभग 240 बच्चे, सात अध्यापक है। मुख्य अध्यापिका कलावती राऊत ने बताया कि 65 वर्ष पुराने स्कूल में इमारत जर्जर हो चुकी है। पूर्व छात्र उन्मेष नार्वेकर के प्रयास से भारत विकास परिषद् की भाईंदर शाखा ₹20 लाख से स्कूल की मरम्मत तथा आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध करायेगी।
**धन्यवाद भाईंदर शाखा**

## मध्य भारत पश्चिम

**देवास :** शाखा द्वारा नव वर्ष पर चन्दन तिलक लगाकर स्वागत किया गया। चामुन्डा क्षेत्र में फ्रिज देने में आर्थिक सहयोग किया गया।

## मध्य भारत उत्तर

**गुरु तेग बहादुर-शिवपुरी :** शाखा द्वारा नव वर्ष पर शीतल जल प्याऊ का उद्घाटन किया गया।

**संस्कृति ग्वालियर :** वेलएयर पब्लिक स्कूल में बाल संस्कार शिविर लगाया गया। सदस्यों का होली मिलन सम्पन्न हुआ। शिविर में बच्चों को संस्कृति और संस्कार पर परिचर्चा के द्वारा मूल्यांकण किया गया।

**ग्वालियर :** शाखा के दायित्वग्रहण में हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि देश के शासक तो बदलते रहे लेकिन शासन व्यवस्था नहीं बदली। उन्होंने दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन के सिद्धान्त में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के विकास पर जोर दिया। केवल अर्थ और काम जीवन का लक्ष्य नहीं है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह मानव जीवन का लक्ष्य है। समारोह में 27 वनवासी छात्राओं को शैक्षिक सामग्री एवं वेष उपलब्ध कराये गये। महापौर श्री शेजवलकर ने कार्यकर्ताओं को लोहे के समान बनने का आह्वान किया। लोहा ही एक ऐसी धातु है जो पारस पत्थर के स्पर्श से सोना बन जाता है। अत: कार्यकर्ता को भी संस्कार रूपी पारस के स्पर्श से सोना बनने की क्षमता है। श्री पी.के.जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने शपथ दिलाई। शाखा द्वारा गर्ग कम्पलेक्स आन्ध्रा बैंक के निकट प्याऊ का शुभारम्भ किया गया।

**डबरा भवभूति :** शाखा द्वारा पौधशाला के निकट स्थायी प्याऊ की व्यवस्था की गई। प्याऊ के पास पशुओं के लिए सीमेंट की टंकी रखी गई। नगर में प्याऊ प्रकल्प चर्चा का विषय रहा।

**समर्पण-ग्वालियर :** शाखा द्वारा निध्रन कन्या के विवाह पर घरेलू सामान तथा अन्य सामग्री प्रदान की गई। शीतल प्याऊ का लोकार्पण किया गया।

## छत्तीसगढ़

**रायपुर :** नगर में दायित्व ग्रहण पर मनो चिकित्सक प्रयाग नारायण शुक्ल ने कहा कि घर में बच्चों को प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। डॉ. शुक्ला ने माता पिता और बच्चों के आत्मीय संबंध ों पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि स्त्री पुरुष तो माता पिता बनना चाहते हैं। बन भी जाते हैं, परन्तु बच्चों और स्वयं के बीच के संबंध ों को समझ नहीं पाते। बच्चों के मस्तिष्क का विकास 16 वर्ष तक ही होता है। इस प्रकार माता पिता और बालक की मानसिक आयु समान होती है। परिवार में बच्चों को अपनी जिज्ञासा रखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। बच्चों के लिए स्नेह आत्मीयता के साथ संस्कार होना भी आवश्यक है। डॉ. शुक्ला ने बच्चों के साथ माता पिता के संबंधों का भी उल्लेख किया। डौ. शुक्ला को शाखा द्वारा श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

## बिन्ध्य

**अनूपपुर ( कटनी ) :** शाखा द्वारा आयोजित समारोह में कलेक्टर नरेन्द्र सिंह परमार मुख्य अतिथि ने परिषद् कार्य की सराहना की। शहडोल शाखा का होली मिलन समारोह में सदस्यों ने धमाल किया। कटनी शाखा के कैल्डरस इण्डिया द्वारा एक एम्बुलेंस प्रदान की गई। कीर्ति विचपुरिया एम्बुलेंस का संचालन वखूबी कर रहे हैं।

**शहडोल :** शाखा द्वारा गर्मी से परेशान ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए सिविल कोर्ट में प्याऊ की व्यवस्था की गई जनता ने इसकी तारीफ की।

## चिन्तन

किसी भी संगठन में सक्रिय और श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का होना महती आवश्यकता होती है। संगठन में सक्रिय ऐसे श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के काम करने से आत्म संतुष्टि मिलती है। कार्यकर्ता निर्माण के लिए कुछ आवश्यक बदलाव जीवन में आना अपेक्षित है। स्वाध्याय, चिन्तन, आत्मनिरीक्षण और श्रेष्ठ आचरण कार्यकर्ता के मौलिक गुण हैं जिनका विकास कर कोई व्यक्ति कार्यकर्ता बन सकता है।

स्वाध्याय (संगठन साहित्य, धर्म ग्रन्थ, इतिहास प्रसंग) के द्वारा कार्यकर्ता में बौद्धिक विकास होता है। इससे विचारों की पुष्टि तथा जानकारी बढ़ती है। विचारों की बहुलता से सद्विचार और चिन्तन शुरू होता है। चिन्तन की क्षमता विकसित होती है। चिन्तन की प्रक्रिया क्रमश: आत्म निरीक्षण, आत्म शुद्धि और आचरण शुद्धि को प्रेरित करती है। संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच, समर्पण इसका परिणाम होता है। चिन्तन की प्रक्रियात्मक शान्ति करने के लिए प्रयास करने होते हैं। आगे का कार्य सत्संग से स्वयं सिद्ध होता है।

– **डी.डी.शर्मा**, पाली (राजस्थान)

## तेलंगाना

**संतोषनगर-हैदारबाद :** शाखा द्वारा वाटर कूलर स्थापित किया गया। गर्मी में पानी सुविधा उपलबध कराई गई। इलाहाबाद बैंक के प्रबंधक ने सहयोग किया।

## महाराष्ट्र-2

**स्वारगेट :** शाखा द्वारा 100 अनाथ बच्चें की क्षमतावाला

अनाथाश्रम प्रारम्भ किया गया। चिकित्सकीय यंत्र बैंक स्थापित किया गया। 30 लाख रुपये दान प्राप्त हुआ।

## PUNJAB NORTH

**Dr. Kitchlu, Ludhiana :** Indian New Year 2073 celebration was organized by the branch under literacy drive Guidance to students and parents is given for last eight years. PDC was organized where 80 students participated in the camp. Students were given inspiration of nationalize in the camp. They were trained for sincerity and dedication, save water and positive thinking. Drug addiction and Bhroon Hatya.

## PUNJAB EAST

**Chandigarh :** A cultural programme at Sector 48B was organized. Shri Debesh Maugdal Deputy Manager was the Chef Gust. Children from member's families were applauded for the cultural programme. Office bearer of four branches were enjoyed the programme. H.R.Narang president Chandigarh Zone honored the Sr. Members.

पंचकुला के परिषद् भवन में बालिका केन्द्र के अन्तर्गत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अन्तर्गत बालिकाओं ने शपथ लिया कि – ''मैं शपथ लेती हूँ कि मन लगाकर पढ़ाई करूँगी, अपने पैरों पर खड़ा होने का उद्देश्य पूरा करूँगी। परिवार के सदस्यों को आत्म सम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित करूँगी। लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास करूँगी। गली मुहल्ला साफ रखूँगी। बिना जाति, धर्म, ऊँच-नीच के भेद भाव के देशवासियों के हित में काम करूँगी''।

## HARYANA NORTH

**Suraj Panchkula :** The branch organized a Rashtriya Ekta Yagya at Model Park to invoke peace brotherhood and community. Yagya was attended by 150 people and they appreciated the efforts for national integration.

**Ismilabad :** Branch Organized New Year 2073 at Gaushala Campus Shlokas and Hawan was performed in the presence of leading businessman Sandeep Agarwal. A large no. of villages also attended the function.

## DELHI NORTH

**Prashant Vihar :** Shri Vijay Garg President of the branch announced a number of programme during summer season. A drinking water project along with Sharbat Chhabil on Nirjala Ekadashi is proposed. A drawing completion on Vir Savarkar and foundation day is proposed. Branch has largest of 508 members.

### खुले हुए नेत्रों से चारो ओर देखो- नरेन्द्र

एक दिन एक जिज्ञासु नवयुवक स्वामी विवेकानन्द से मिलने आया। युवक! मैंने अनेक मत मातान्तरों का अध्ययन किया है। परन्तु यह नहीं समझ सका कि शाश्वत सत्य कहाँ विद्यमान है। स्वामी जी बोले चिन्ता मत करो कुछ समय पहले मेरी भी यही स्थिति थी। मुझे बताओ कि तुमने क्या-क्या सुना है, क्या किया है। नवयुवक ने कहा कि मैंने थियोसोफिकल सोसायटी के धर्म प्रचारक से मूर्ति पूजा का ज्ञान पाया। डट कर पूजा की लेकिन शान्ति नहीं मिली। किसी ने मुझे ध्यान साधना का आग्रह किया। मैंने कमरा बन्द करके साधना की, आँखें बद कर घंटों बैठा। फिर भी शान्ति नहीं मिली।

स्वामी जी द्रवीभूत हो गये। उन्होंने कहा कि मेरी बात मानो, सबसे पहले खुले दरवाजे से अड़ोस-पड़ोस के दुखी, असहाय, निर्धन लोगों को देखो और उनकी सेवा करो। बीमार को दवा, अज्ञानी को ज्ञान, भूखे को खाना दो, जी जान से सेवा करो, तुम्हें शान्ति प्राप्त होगी। नवयुवक के मन में समाधान नहीं हुआ। उसने कहा कि सेवा करते नीद की कमी, बीमार की सेवा करते हुए मैं बीमार पड़ गया तो क्या होगा। नवयुवक के मन की दुर्बलता भापकर स्वामी जी ने तीखी भाषा में कहा कि तुम अपनी सुख सुविधाओं का इतना ध्यान रखते हो कि रोगियों की सेवा के लिए तुम आगे नहीं बढ़ सकते। तुम्हें शान्ति कैसे मिलेगी। नवयुवक समझ गया उसका सिर शर्म से झुक गया।

## DELHI SOUTH

**B-Block, Janakpuri:** 10 couples were selected for Samuhik Saral vivah at Janakpuri branch. All the holy rituals of marriage were performed at Sanatan Dharam Mandir. Dr. J.K.Jain of FIEM industries were present at this ceremony. He extended his substantial financial support for this event. Al necessary kitchen and domestic items were donated to the couples. Lunch and breakfast was served for all. Shyam Sharma counselor, Kusum Gupta of super soul women donated generously. Donations also come from Naina Anand (Canade) and Omesh Suri (Dubai). The branch completed 93 marriages during last1 11 years.

## DELHI EAST

**BVP Virat :** Branch is installed with the inspiration of Madhav Vihar branch of Delhi East. General Secretary Shri Ritu Bhatia and National

vise president Shri S.K.Wadha handed over the charter to new office bearers.

### SWACHH PAWAI SWASTH PAWAI

It was a Sunday like any other Sunday. The heritage garden witnessed people at the popular weekend. Soon volunteer in white T-Shrit with play cards wearing gloves and bags, started to pick up the litter. They were requesting visitor not to litter around the park. The playcards carried interesting slogan on maintaining cleanliness.

Volunteers gathered at a place and presented a street play to carry the message of Swachh Pawai. As the crowd gathered around, volunteers gave introduction about Jago Pawai of BVP Campaign. The play written by Rishikant Joshi and directed by Ms. Kanika Mahla. The play was immediately responding the gathering with an oath for cleanliness.

The group then went to Central Avenue Eden market and cypress gate in the market Kamlesh Pareek and Anant Kode administered the oath thus a simple Sunday turned out to be a very different one.

## BRAHMAVART

**Kidwai Nagar, Kanpur :** Celebrated Indian New Year 2073 Arjun Das Khalri appreciated the programme and other Sewa projects of BVP.

## BRAJ PRADESH

International Cultural exchange meet (5 June to 14 June 2016) is organized by Agra (Braj Pradesh), visit to Kualalumpur, Singapur universal studio and nearby places – contact Basant Kumar Gupta 9897047430

## ODISHA

**Bhubaneshwar :**Branch organized foundation day of the branch. Ajay Kumar Das, Shantanu Kumar Rath Director Door Darshah and organizing secretary S.N. Panda was present. They appreciated the projects of BVP.

## RAJASTHAN SOUTH

**Chittorgarh:** Vishwa Mohini writes about Praudh Sadhna Shivir. It gave us a lifetime opportunity to visit the land of great warrier Maharana Pratap who stood against the Mighty moghul emperor with determined valour, ready to die and never to surrender. Vijay Stambh stands tall surrounded by hills and mounts; museum is the storehouse of weaponry and paintings of the bygone era. The temple of Meera bai stood as a symbol of devotion to lord krishna. Palace of Maharana Padmini where she performed to embrace death by jumping into the fire. Jharokhan and water bodies where the tyrant enemies had a glimps of her legendary beauty. Thanks.

**Dombivile (Maharashtra):** Evolved a cheapest method of rain water harvesting Dombivile branch of Maharashtra Costal has decided to made pits of 5'x5'x5' on border of public park, garden, the soil becomes hard and loses capacity to absorb water. Therefore it needs to be dug and loosen the soul so that it becomes absorbable and retain water JCB can be used to dig a pit, the pit should be refilled with brick pieces crushed stones and sand. Rain water will seep in the earth; Appa ji Joshi is creating awareness in the field.

## GOA

**Bicholim:** Bicholim branch of Goa witnessed the installation ceremony of Dr. Shri Makrand Kamath president and his team on 30 April 2016 at the gracious Deen Dayal Hall Dr. Santosh Pal Kar principal of Sridhar Caculo College of Commerce & Management. And Dr. Pundalik Kakode state president welcomed the chief guest. Dr. Palkar suggested to start some projects for youths. He was very much impressed by the activities and projects of BVP Sri Govind Sakhalkar was felicities for the work of collecting photo and information about the forts of Chhatrapati Shivaji Maharaj.

### भारत को जानो, गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन की राष्ट्रीय समिति की बैठक

संस्कार प्रकल्पों की राष्ट्रीय समिति की बैठक 17 अप्रैल, 2016 को केन्द्रीय कार्यालय, पीतमपुरा में श्री नीरज गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में 9 रीजनल सचिव तथा केन्द्रीय टीम के 3 सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में सभी प्रान्तीय प्रकल्प संयोजकों की जानकारी, सम्पर्क तथा आयोजन की प्रारंभिक चर्चा पर बल दिया गया। प्रान्तीय कार्यशाला में भागीदारी तथा लिखित परीक्षा, प्रश्न मंच एवं नियमावली लागू करने पर बल दिया गया। केन्द्रीय कार्यालय में भारत को जानो की पुस्तक उपलब्ध है। सभी रीजनल सचिव केन्द्र की सूचनाओं का आदान प्रदान करते रहें। ऑन लाइन प्रतियोगिता के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर सहमति हुई। इस वर्ष ''वैश्विक परिदृश्य में भारतीय व्यक्तित्व'' विषय प्रतियोगिता में जोड़ा गया है। गुरु वन्दन छात्र अभिनन्दन के बारे में सभी रीजनल सचिव प्रान्त और केन्द्र का समन्वय करेंगे। अधिक से अधिक स्कूलों में यह आयोजन सुनिश्चित किया जाए। संचालन डॉ. तरुण शर्मा, राष्ट्रीय मंत्री ने किया।

## SUDARSHANI – A TREND SETTER SEMINAR

Ananagar branch of Chennai is conducting some trend setter event. Out of which sudarshani 2016- A visionary women was very much applauded by the participants.

**Background:-** Women are the central point of Indian families. Education should prepare one to take in its stride various experiences. One has to be a great visionary, have clearly and make the right choice either to build a career or nurture a happy family. Rise of women in all sectors is evident in modern society. No. of women reaching greater heights in career, also take care of their responsibility. To supplement the efforts taken by the colleges to nurture the such women, a seminar Sudarshan 2016 was organized.

**Theme**: of the seminar was work life balance for women keynote address was presented by Pujya Prem Pandurang. A panel discussion involving successful women included Shobha Gupta Director Adarsh line, export company. Nisha Chandran flexi carrier India, Laxmi Priya Head Retail liabilities operation, Mrs. Gauri, Madhumati Narayana a management expert moderated the discussion.

Panel discussion and interaction there off opened up the minds of the participants and stimulated thoughts on.

1. A women and men are culturally equal.
2. Women are emotionally strong and creative by nature, make their life meaningful.
3. It is not work life balance but work life integration discussions
4. Women are lacking in Identifying their strength so we need such discussions.
5. Working women have advantage times of exposure and mere opportunites to develop leadership qualities.
6. Women should not choose to work for money but to develop their self-confidence.

Shri GPN Gupta present BVP, Shri Arun director K.S. College for women and Shri Narender Secretary Shri Ankur assisted the dais in performance welcome, prize giving and sponsoring the event.

---

## जीवन का अर्थ

जीवन और मृत्यु परमात्मा के हाथ में है। जीव को स्वयं न तो जन्म चुनने का अधिकार है और ही मृत्यु प्राप्त करने का अधिकार है। जीवन जीने के बाद जब जीव मृत्यु में प्रवेश करता है तो उस अवस्था में उसे फिर जन्म के लिए हजारों, लाखों वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, लेकिन जो सिद्ध पुरुष परमात्मा-तत्व में लीन हो जाता है उसे पुनःगर्भ चुनने का अधिकार रहता है, वह स्वेच्छा से गर्भ चुन सकता है, लेकिन अन्य जीव वैसा नहीं कर सकते। जीव केवल जी सकता है।, जीवन पर उसका कोई अधिकार नहीं होता। जब मृत्यु का काल आता है तो परमात्मा उसे अपने हाथों मृत्यु नहीं देता। वह जीव को स्वयं ऐसी प्रेरणा दे देता है कि वह स्वयं अपने आचरण से, अपने व्यवहार से जीवन को नष्ट कर देता है। बुद्धि विवेक से नियंत्रित होती है। जब जीव का अंतकाल आता है, तो उसकी बुद्धि भ्रमित हो जाती है। वह अच्छे-बुरे का विचार करना छोड़ देता है। अच्छा आचरण करना छोड़ देता है। उसके शरीर से तेज नष्ट हो जाता है। शक्ति क्षीण हो जाती है और विचार स्थिर नहीं रह जाता। वह स्वयं ऐसा आचरण करने लगता है कि उसका जीवन अशान्त हो जाता है। काम, वासना व क्रोध के कारण उसका सारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता, फलतः उसका जीवन स्वयं काल के गाल में प्रवेश कर जाता है। देवताओं को पराजित करने वाले रावण का जब अंतकाल आया तो उसने नैतिक धर्म छोड़ दिया। उसका बल नष्ट हो गया, बुद्धि व विचार क्षीण हो गए और वह काल के चंगुल में फंस गया। परमात्मा किसी के नाश का भागीदार नहीं बनता। वह डंडे से किसी का सिर नहीं फोड़ता, लेकिन मनुष्य स्वयं ऐसा काम करने लगता है, वह विकारों से ग्रस्त हो जाता है।

यदि मनुष्य निर्मल मन से परमात्मा को स्वयं को समर्पित कर दे तो बात बनते देर नहीं लगती। प्रभु श्रीराम ने स्वयं कहा है कि मेरे लिए सबसे प्रिय वही भक्त है, जो छल-छिद्र और कपट से दूर है। भगवान भोले लोगों के लिए भोले होते है और चालाक लोगों के लिए भाले होते हैं। प्रेम से मांगने पर भगवान शिव ने रावण को सोने की लंका दी और दुष्टता करने पर उसका वध भी किया और उसकी सोने की लंका भी गई। इसलिए मनुष्य को चतुराई करनी चाहिए, लेकिन वह चतुराई लोकहित और जनकल्याण के लिए होनी चाहिए। -**आचार्य सुदर्शन**

## IMPORTANCE OF GURU IN INDIAN CULTURE

**Neeraj Gupta**,Chairman, GVCA and Yuva Sanskar(Mumbai)

Mother gives birth to a child. But Guru / Teacher are one who delivers the knowledge, skill and awakens the intelligence of a child.

All of us felt the necessity of a guru in our lives. None is capable to do everything at its own Gu means guhaya or darkness. Ru means remover. He who removes our ignorance and makes our life happy and comfortable, enlightened and blessed, is our Guru, the very first lesson that a guru teachers is patience, gratitude, tolerance humility love and respect for all. In fact Guru is one who is largely responsible for laying the foundation, and molding the character of a child.

Regrettably, with deteriorating cultural values and educational system in our country, it has become all the more significant to understand the importance of teacher student relationship. Under the present scenario, the children spend approximately 5 to 7 hours a day in school with the teachers and a few more hours at various kinds' of tuitions / classes. Therefore a positive relation between student and teacher is essential crucial and obligatory in the overall development of a child.

Researchers have found that academic achievement and student behavior are influenced by the quality of the teacher student relationship. The crux of having positive and fruitful relationship between them is good communication, continuous constructive interaction and providing proper feedback to the students. Mutual respect for each other establishes a bond between them which has enduring implications for students' academic, emotional, social development and will have a positive and progressive classroom relationship.

However, the teacher should bear in mind that every student is different. Some are fast learners and some are slow. Yet some are trouble mongers. This necessitates the teachers to adopt different techniques for different students to enable them to understand the lessons. The teachers need to learn organizational and managerial skills that will help them to provide more conducive and congenial classroom environment leading to more constructive and effective teaching. Teachers should be extremely careful with their own behavior. Therefore, teachers should never let them down. Never mix your words with your mood because you will have many options to change your mood but you will never get any option to replace your spoken words.

**"Children are like Soft wax who will take any impression".**

Nevertheless, to take full advantage of Teacher-student relationship, attitude and commitment towards each other are of paramount importance. The quality of their early relationship will have a long lasting impression.

- The teacher must endeavor to know students individually. As the teacher's familiarity grows. So the effectiveness of advice deepens proportionately.
- The teacher must develop the skill to analyze student's personality, organize his or her character traits into various categories, and design a strategy of rectification specific to each trait.
- The teacher must express love and affection toward students. Love is the indispensable ingredient for nourishing holistic growth of a student.
- The teacher must take time to reflect upon student's progress, refining and adjusting vision of how best to influence them toward positive change.

**How to develop positive relationships with your students:**

**Positive relationship encourages student's motivation and engagement in learning**

- Show your pleasure and enjoyment of students.

- Interact with students in a responsive and respectful manner.
- Offer students help in achieving academic and social objectives.
- Help students reflect on their thinking and learning skills.
- Know about individual students' backgrounds, interests, emotional strengths and academic levels.
- Avoid showing irritability or annoyance towards students.
- Encourage students to be caring and respectful to one another.
- Create examples to match student's interests.
- Construct appropriate learning opportunities in concurrence to student's temperament
- Be respectful and sensitive to adolescents.

**Give students meaningful feedback**

Notice the way that you give feedback to your students. If possible, watch a video of your own teaching.

- Give students meaningful feedback.
- Focus on what your students have accomplished rather than what they have not yet mastered.
- Be watchful of your body language, facial expression and tone of voice.
- Be careful of your behavior in and outside class room because students would like to model it. Remember, **"Children are keen observers".**
- Be sure that the feedback you give to your students conveys the message that you are supporting their learning and that you care about them.
- Show your students that you are interested in them as people too.
- Pay equal attention to all students.

**Create a positive classroom climate**

- Be sure to allow time for your students to link the concepts and skills they are learning to their own experience.
- Build fun into the things you do in your classroom.
- Plan activities that create a sense of community
- Make sure to provide social and emotional support.

**Develop positive discourse with difficult students and students with challenging behavior**:

Think about what you say to difficult student in your classroom. No one likes being bedeviled and pestered, and your students are no exception.

- Try to find a time or place when you can have positive discussion with the problem students.
- Notice and mention the positive behaviors they exhibit.
- Be assured that even if a challenging student appears unresponsive to your requests, he is hearing the messages that you are giving him. His responses may not change his immediate behavior but will definitely have affirmative influence in the long – run.

- Difficult students will require more energy and time spent with them on your part which will allow them to develop trust in you.
- Customize your approach to difficult students in accordance to their interests and what motivates them.
- Remember, persistent teacher – student conflict will exhibit negative externalizing behaviors; so it is important for teachers to build close relationships at an early age with children at-risk for behavioral issues.

"**If a child can't learn the way we teach, maybe we should teach the way they learn**."

In summation, hopeful, positive, constructive and fruitful teacher-student relationship can be developed through productive daily interactions, conscious efforts to connect and win them over and draw students into the process of learning. These bonds essentially contribute to improve the quality of school life for both, teachers and students. It also channelizes two individuals to grow together nurturing each other in a supportive environment.

**Last words**:

Teachers can do a mammoth and a yeoman's service to the society if they take a step beyond the syllabus.

1. Don't educate your children to be rich. Educate them to be 'happy and contended' in their life so when they grow up they will know the value of life.
2. Though not in any syllabus, teach the children to understand and manage, 'interpersonal relationship' that they will encounter throughout their life. Unfortunately, with the declining cultural values and almost zero tolerance, this has become an extremely important, significant and a burning issue of our society. We just cannot afford to ignore it any more.

## बड़ी सोच

हम जिस जमीन और समाज से पैदा होते हैं, उसके लिए हम क्या करते हैं? उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं? हमारा धर्म किताबों और उपदेशों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। हमारी निष्ठा की झलक हमारे दैनिक व्यवहारों में दिखनी चाहिए। जिससे पाया है, उसे देना सीखें। यही सच्चा धर्म है। इस संदर्भ में अपनी मातृभूमि को हम क्या दे सकते हैं? कैसे दे सकते हैं? मातृभूमि कोई व्यक्ति तो नहीं, जिसे भौतिक चीजों की आवश्यकता हो। देने का अर्थ यह है हम जिस काबिल हों, हम जिस पद पर हों, जो कार्य हम कर रहे हों, वह ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें। अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना ही देशभक्ति और देश- धर्म निभाना है।

मौजूदा समय में हर इंसान की सोच बहुत संकीर्ण और स्वार्थी। हो गई है। यदि अपनी सोच को उदार बनाएं और जो भी कार्य करें उसे अपने देश और समाज के लाभ को ध्यान में रखकर देखें तो शीघ्र ही उसके सुखद परिणाम भी नजर आने लगेंगे। हमारी कथनी और करनी में किसी भी स्तर पर फर्क नहीं हो। दूसरों से अपना धर्म निभाने की अपेक्षा करने से पहले हम अपने धर्म यानी कर्तव्यों के पालन के बारे में सोचें। स्वधर्म के पालन से कई फायदे हैं। इससे हम जहाँ कई बुराईयों से बच जाते हैं, वहीं पर दूसरों की बुराई देखने और बुराई करने से भी बच जाते हैं। सफलता और असफलता के बारे में न सोचकर अपने कर्तव्यों के पालन के बारे में सोचना चाहिए। दूसरा हमारे लिए क्या कर रहा है, इस बात के बजाय हम दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं, यह भाव हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। किसी दुराग्रह और स्वार्थ के बगैर हम अपने स्वधर्म के पालन में लगे हों तो फिर इसकी कोई वजह नहीं कि जिंदगी की परीक्षा में विफल हो जाएं।

स्वयं की समझ को बढ़ाना जरूरी है। इसी से जीवन में खुशियों को लाया जा सकता है। खुशी हमें उपहार के रूप में नहीं मिलती, इसके लिए हमें प्रयास करना पड़ता है। सुख हमारे प्रयासों का फल है। स्वयं को सुखी बनाने के साथ-साथ समाज और राष्ट्र में खुशहाली लाना भी आवश्यक है, हम इसके लिए स्वयं प्रयत्नशील बनें। सुख पाना मानव का स्वभाव है। जब आप दूसरों को सुख देते हैं तो निश्चित रूप से आपको सुख और संतोष मिलने लगता है। - **ललित गर्ग**

## समग्र ग्राम विकास योजना

समाज परिवर्तन की सफलता की एक रिपोर्ट

भारत को गाँवों से अलग कर के नहीं देखा जा सकता है। भारत का विकास गाँवों के विकास पर ही निर्भर है, अत: गाँवों का विकास परिषद् के संस्कार एवं सेवा कार्यक्रमों की श्रृंख्ला की प्राथमिकता में रहा है।

परिषद् की समग्र ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न प्रान्तों के 40 गाँवों में विकास कार्यों के माध्यम से गाँवों में परिवर्तन की नई इबारत लिखी जा रही हैं कनाडा के ओटावा शहर में कार्यरत भारत के डॉ. शिवि जिन्दल एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती सरिता जिन्दल द्वारा स्थापित जिन्दल फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से क्रियान्वित इस योजना के परिणाम भी अब सामने आने लगे हैं।

जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उडीशा, पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा के 14 गाँव जीवन की मूलभूत आवश्यकता (शुद्ध पेयजल, घरों में शौचालय, साथ सुथरे विद्यालय एवं गलियाँ, मुक्तिधाम इत्यादि) के सन्दर्भ में न केवल आत्म निर्भर हो चुके हैं वरन पास के गाँवों के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर उन्हें भी स्वयं के साधनों एवं प्रयासों से अपने गाँवों को विकसित करने की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।

परिषद् के विकास कार्यों से प्रभावति होकर राजस्थान में डुंगरपुर जिले के ग्राम भीलूड़ी तथा घाटा का गाँ, अजमेर जिले के ग्राम सिंघावल, उदयपुर जिले के ग्राम कालीवास, कर्नाटक में उत्तरा कन्नड़ा जिले के ग्राम कटगल कुमटा, उड़ीशा में नवागढ जिले के ग्राम बारापल्ला में संबंधित राज्य के शासकीय विभागों ने भी उनकी योजनाओं का क्रियान्वयन परिषद् के साथ मिलकर करना प्रारम्भ कर दिया है।

जहाँ महाराष्ट्र में नाशिक जिले के ग्राम खरोली, उडीशा में कटक जिले के ग्राम पुरूना टिगरिया में चल रही हमारी विकास योजनाओं के कारण वहाँ के महिला स्वयं सहायता समूह पूरे गाँव को नशामुक्त करने का अभियान चला रहे है। वहीं दूसरी ओर हरियाणा में हिसार जिले का मोहब्बतपुर गाँव, जहाँ पूर्व में जातिगत अलग-अलग मुक्तिधाम थे, अब पूरे गाँव का एक ही मुक्तिधाम होकर सामाजिक समरसता का श्रेष्ठ उदाहरण बन रहा है। इस मुक्तिधाम का उपयोग बिना भेदभाव के आसपास की बस्ती के भी ग्रामीणजन करने लगे हैं।

पंजाब में पठानकोट जिले के ग्राम दुनेरा, उत्तर प्रदेश में बागपज जिले के ग्राम सुन्दरनगर (फजलपुर), राजस्थान में उदयपुर जिले के ग्राम कालिवास, जम्मू कश्मीर में सांबा जिले के ग्राम रामपुर गढ़वाल, पश्चिम बंगाल में हुगली जिले के ग्राम इलसोबा, आन्ध्र प्रदेश में श्री काकुलम जिले के ग्राम कडुमा धनसरा के ग्रामीण विद्यालयों की स्थिति में सुधार लाने से वहाँ के विद्यालय में जाने वालों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ ये विद्यालय अब जिले के श्रेष्ठ परिणाम देने वाले विद्यालय बन गये हैं।

गाँवों में परिषद् की योजनाओं के माध्यम से आ रहे ऐसे परिवर्तनों ने संबंधित क्षेत्रों के विधायक/सांसदों को भी प्रेरित किया है, जिसके कारण राज्य शासन की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ इन्हीं गाँवों को दिलाने में रूचित लेने लगे हैं।

भारत विकास परिषद् की इस योजना के माध्यम से गाँवों में आ रही आत्मनिर्भता एवं समाज परिवर्तन के परिणाम तथा इस तरह की अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि जिन जिलों में हमारी शाखायें हैं उन जिलों में कम से कम एक गाँव अवश्य अंगीकृत कर उसके समग्र विकास की पहल करें। - **अशोक जाधव**, राष्ट्रीय चेयरमैन (ग्राम विकास)

## विज्ञान और प्राधौगिकी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलधियाँ

सामान्य जनता के लिए लाभकारी योजनाओं की उद्घोषणा में वर्तमान सरकार ने अपना प्रभावकारी स्थान बना लिया है। परन्तु वैश्विक शक्तियों की तानाशाही और हस्तक्षेप के चलते विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में हमारी परम्परागत चिकित्सा पद्धति, औषधीय वनस्पतियों पर विदेशी निगाह सदेव चिन्ता का विषय रही है। उपलब्धियों की कुछ वानगी देखिए। **( 1. )** स्वदेशी तकनीक पर आधारित निशानेबाजी तंत्र प्रशिक्षण यंत्र ''ध्वनि'' का विकास कर निश्चित समय में प्रतिक्रिया देने में सक्षम इस यंत्र के 2014 में भारतीय सेना को सौंप दिया गया। **( 2. )** बायोटेक्नॉजी विभाग के सहयोग से स्वदेशी रोटवायरस और सुई से दिये जाने वाले पोलियो वैक्सीन का अविष्कार किया गया। **( 3. )** सी.एस.आई.आर. के सहयोग से जम्मू कश्मीर में आरोग्य ग्राम योजना के अन्तर्गत सुगंधित पौधों की खेती 1000 ग्रामों में की जाएगी। **( 4. )** हल्दी, देवदार और चाय पर यूरोपीय कम्पनी को पेटेन्ट नहीं मिला, भारतीय प्रयासों से उक्त कम्पनी ने अपना आवेदन वापस लिया। **( 5. )** जावित्री से मुख शुद्धि का मिश्रण बनाने के कॉलगेट पामालिव कम्पनी के प्रयत्नों को विफल कर दिया गया। - **नवोत्थान**

R.K.Modi of Navi Mumbai sent a very practical and useful suggestion for exploring Sanskrit Speaking. He pointed out that UP Govt. has appointed many Urdu teachers in Madersas. It is because of the vote bank pressure. We are supposed to be the follower of Sanskrit BVP can help to organized Sanskrit speaking class at branch level, students and person interested in Sanskrit speaking can be regularly attend the classes.

# हमारे कार्य का वैचारिक अधिष्ठान

–**डॉ. बजरंगलाल गुप्ता**, क्षेत्रीय संघचालक

संस्कारों को समाज में प्रचारित ओर प्रसारित करने का काम तो समाज के चिन्तकों, विचारकों और ओपिनियन मेकर्स ने करना है। भारत विकास परिषद् के स्थापना से पूर्व ऐसे लोग विदेशी मूल की संस्थाओं के माध्यम से सेवा का काम करते थे। ऐसे में विकल्प देने के लिए विचार हुआ। एक सम्मानजनक सार्थक विकल्प का विचार हुआ। प्रासंगिकता एवं सार्थकता यह अनिवार्य शर्त थी। इस विचार से भारत विकास परिषद् का जन्म हुआ। हमारी यह जो पंच सूत्री है- सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण इनका कोई अलग-अलग अस्तित्व नहीं है। वरन यह सूत्रों का पंचामृत है। पाँचों तत्वों का समन्वित रूप मिलकर आनन्ददायक होता है। इससे प्राप्त भाव भावना और ऊर्जा महत्वपूर्ण हैं यह पाँच तत्व समन्वित है, एक रूप है,यह पृथक अस्तित्व नहीं है। इसलिए परिषद् के विस्तार के लिए पाँचों तत्वों का समन्वय आवश्यक है। इसका कारण हमारा वैचारिक अधिष्ठान हैं अन्य समाजसेवी संस्थाएं भी ये काम करती है। स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा के अनेक कार्य हो रहे हैं। परन्तु हमारा वैशिष्टय क्या है। वैचारिक अधिष्ठान (Conceptual framework) हमारी विशेषता है। विशेष दृष्टि को लेकर हम काम करते हैं। काम करने से यदि हमारी दृष्टि पुष्ट नहीं है तो कार्य व्यर्थ हैं केवल काम या गतिविधि चलाना अपना उद्देश्य नहीं है। कार्य के पीछे दृष्टि क्या है, मौलिकता क्या है। वर्तमान समय वैचारिक संघर्ष का समय है। शास्त्रों के संघर्ष का समय गया। अब विश्व किस विचार को लेकर चले यह विचारणीय है। एक विचार पश्चिम का है इस विचार के लिए बनी नीति और कार्य चल रहे हैं। यह एक खास विश्व विचार दृष्टि की उपज है। इसे Fragmented mechanistic worldview कहते हैं। खंडित यांत्रिक विश्व दृष्टि। हमारी दृष्टि भिन्न है। पश्चिम दृष्टि समाज को मशीन मानती है। मशीन में संवेदना नहीं होतीं मशीन को ठीक करते समय भी यंत्रवत व्यवहार होता है। संवेदना शून्य व्यवहार का विचार समाज पर भी लागू किया गया। समाज के बारे में नीतियाँ और सिद्धान्त बनें वे सभी संवेदन शून्य हैं पर्यावरण का संकट क्यों है। यह तकनीकी मशीन पद्धति संवेदन शून्य है। पेड़ काटना, संसाधनों का शोषण, उपभोक्तावाद के विचार से जन्म ली हुई समस्याएं है। यह दृष्टि वैयक्तिक सुख के महत्व देती है। यह दृष्टि प्रकृति पर विजय को मानती है, शोषण को मानती है। इस परिस्थित में पर्यावरण की समस्याओं, ताप वृद्धि, जलवायु परिवर्तन का दायित्व इस विश्व दृष्टि पर है। इससे संसाधनों का अधिकतम दोहन अवश्यमभावी है। इसी से वर्तमान विकसित देशों का विकास हुआ। ये ही देश पृथ्वी बचाओ के सम्मेलन करके पर्यावरण संतुलन के लिए गरीब और अविकसित देशों को दोषी मानते है। सभ्यता के मापदण्ड अच्छे कपड़े, मकान, बड़ी गाड़ियाँ, असीमित उपभोग माना जाता हैं जीवन मूल्यों, संवेदनशीलता, मानवीय गुणों की चर्चा नहीं है। जीवन का मापदण्ड उपलब्ध उपभोक्ता, वस्तुओं एवं सेवाओं के टोकरे से मापा गया हैं सरकार की नीतियों का उद्देश्य भी सामान्य जन का जीवन स्तर ऊँचा उठाना ही होता हैं अधिक उपभोग-बीमारियों-स्वास्थ्य सेवाएं-औषधियाँ-स्वस्थ रहने के अन्य उपाय। एक चक्र का निर्माण होता है जहाँ वस्तुओं और सेवाओं की गिनती बढ़ती जाती है। हमारी दृष्टि संयमित जीवन - निरोगी काया - स्वस्थ रहना अर्थात वस्तुओं और सेवाओं का सीमित प्रयोग। इसे जीवन स्तर नीचा मानते है। विश्व की दृष्टि जीवन स्तर का माप इसका आधार उपभोक्तावाद है। प्रकृति के साधन सीमित है। तेल, कोयला, लोहा, वनस्पति साधनों के बहुतायत उपयोग से स्थायित्व Sustainable Development (धारणीय विकास) संभव नहीं है।

भारतीय विचारकों ने समग्र समन्वित एकाग्र विश्व दृष्टि दी। integrated holistic integral worldview जो पिण्ड है वही ब्रह्माण्ड है। एकात्म विचार। गंगा माता, गौ माता, पेड़, पर्वत, नाग को भी देवता कहा जाता है। तब ये विकसित लोग हमको गंवार, अन्ध विश्वासी, दकियानूसी कहते थे। हमारी दृष्टि को अवैज्ञानिक दृष्टि कहा गया। परन्तु जब जगदीशचन्द्र बसु ने पेड़ पौधों की संवेदना प्रमाणित की। आज के वैज्ञानिक भी यह मानते है कि किसी वस्तु को तोड़ने पर लगातार खंड होते हैं तो अणु बनता है। Atom को तोड़कर जब दूरदर्शी से उसका अध्ययन करते हैं तो वह अणु अपना व्यवहार बदल देता है। अर्थात यह अणु भी चेतन है, जड़ नहीं। वैज्ञानिक मानते है कि सृष्टि की रचना एक अणु से हुई है। यह हमारी दृष्टि आज वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं समग्र समन्वित एकात्म विश्व हमारी कल्पना है। इस दृष्टि से नीति और सिद्धान्त बनेंगे, हमारा व्यवहार इस पर आधारित होगा तो शोषण नहीं होगा। अलगाव नहीं होगा। समाजिक सद्भाव, समरसता यह स्वाभाविक होगी। भाईचारा होगा, विश्व शान्ति होगी। इस दृष्टि को लेकर हम भारत विकास परिषद् का काम कर रहे हैं इसका स्मरण बार-बार करना चाहिए। हमारी क्रिया कलाप, गतिविधियाँ छोटी-छोटी लगती है। पर इसका दर्शन महान है। ऐसे गतिविधि करने वाली अनेक संस्थाएं होगी लेकिन समग्र जीवन दृष्टि का हमारा वैचारिक अधिठान हमारी विशेषता है।

इस समग्र दृष्टि के कारण गरीबों की पीड़ा, वनवासी लोगों का अभाव ग्रस्त जीवन, पेड़ों के कटने के दर्द का एहसास हम को होगा। यह दृष्टिकोण बदलने का काम हम कर रहे हैं। इससे संवेदनशीलता बढ़ेगी, समाज जीवन के व्यवहार में अवधारणों का विकास होगा। इस वैचारिक समाजिक आर्थिक पुनर्गठन के लिए हम परिषद् का कार्य कर रहे है। हमारी कार्य की दिशा सुनिश्चित है। इसका स्मरण करते रहें। तभी व्यवस्था परिवर्तन के आधार पर हमारी दृष्टि का, सोच का, भाव-भावनाओं का समाज हम निर्माण कर सकेंगे। ऐसे महान उद्देश्य के लिए हम काम कर रहे है।

## सत्य का आश्रय

सच-झूठ का खेल निराला है। जो है, जिसका अस्तित्व है उसे सच कहते हैं। और जो नहीं है, पर जिसके अस्तित्व को गढ़ा जाता है, वह झूठ है। सच एक घटना है और झूठ विचारों का प्रवाह। हर घटना मस्तिष्क के अन्दर में गहराई से अपना निशान छोड़ जाती है जिसे कभी भी उकेरकर और उभाकर सत्यापित किया जा सकता है, परन्तु झूठ मात्र विचारों का उमड़ता-घुमड़ता एक संजाल है। झूठ को प्रमाणित करना कठिन है। अंततः झूठ पकड़ा जाता है। सच प्रकृति में घटता है तो प्रकृति-सच कहलाता है, परन्तु यह जीवन में घटता है तो समूचे अस्तित्व में आंदोलन और उद्वेलना होने लगती है, लेकिन झूठ से जीवन का अस्तित्व प्रभावित नहीं होता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह विचारों का प्रायोजित प्रवाह मात्र होता है। झूठ कृत्रिम है, प्राकृतिक नहीं। कृत्रिम है, इसलिए विनिर्मित किया जाता है। इंसान द्वारा बनाई चीजें और प्रकृति प्रदत्त प्रकृतिक उपहार में ऐसा अंतर होता है जैसे कागज का पुष्प और गुलाब का पुष्प। सच जैसा घटता है वैसा ही होता है। उसे कोई भी और कहीं भी वैसा ही बताएगा, जैसा होता है। झूठ के लिए ऐसी कोई शर्ते नहीं है, वह समय और परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित हो जाता है। झूठ द्वंद है, झूठ मुखौटा है। इस आवरण को ओढ़े रखने में बड़ी समस्या है, पर जब आदत हो जाती है तो यह आवरण बड़ा ही डरावना, किन्तु आकर्षक दिखता है। आकर्षक इसलिए कि झूठ बोलने वाला व्यक्ति बड़ी चालाकी से अपनी बातों को प्रस्तुत करता है और डरावना इसलिए कि कहीं असलियत का पता न चल जाए। झूठा व्यक्ति स्वयं को और दूसरों को धोखा देता है। अपने को धोखा देने का तात्पर्य है-अपने अस्तित्व को नकारना। दूसरों को ठगने का मतलब है-अपनी मनगढ़ंत बातों के लिए समाज में वैसी ही भूमिका का निर्वाह करना। दोनों ही दशा में द्वंद है और न अन्दर में शान्ति मिलती है और बाहर चैन। बेचैन मन अपने ही बुने हुए मकड़जाल में घिरा-जकड़कता रहता है। अपनों के अविश्वास से झूठे व्यक्ति की सभी सृजनशील सामर्थ्य चुक जाती है, ऊर्जा नष्ट हो जाती है। परिस्थिति वश किसी का भला करने के लिए बोला गया झूठ भी सच के समान होता है, परन्तु किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए बोले गए झूठ को अच्छा नहीं माना जाता। अतः हमे सच बोलने का अभ्यास करना चाहिए। **-डॉ. सुरचना त्रिवेदी**

## दुष्ट का क्षणिक संग भी कष्टकारी होता है।

किसी जंगल के रास्ते में एक पीपल का विशाल पेड़ था। इस पीपल के पेड़ में अनेक पक्षियों ने अपने घोंसले बना रखे थे। उसी पेड़ पर एक हंस भी रहता था। हंस अपने उदार स्वभाव के कारण सभी पक्षियों के आदर का पात्र था। उसी पेड़ में एक कौआ भी रहता था। हंस के इस उदार भाव के कारण कौआ हंस से ईर्ष्या करता था। एक दिन एक व्यक्ति उस मार्ग से गुजर रहा था, उसके शरीर पर मूल्यवान वस्त्र और कंधे पर धनुष बाण शोभा दे रहे थे। वह गर्मी की तपिश से व्याकुल हो रहा था। पीपल के पेड़ की घनी छाया देखकर उनसे उस पेड़ के नीचे आराम करने का निश्चय किया। पेड़ की सुखद छाया में लेटते ही उसे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद सूर्य की रोशनी उस पथिक के ऊपर आ गई। नींद गहरी होने के कारण वह सोता ही रहा। हंस ने जब सूर्य किरणों को उसके मुँह पर पड़ते देखा तो दयावश उसने अपने पंखों को फैलाकर छाया कर दी, जिससे पथिक को सुख मिल सके। यात्री सुख पूर्वक सोता रहा। नींद में उसका मुँह खुल गया। उसी समय कौआ भी उड़ता हुआ आया और हंस के पास बैठ गया। साधु स्वभाव वाले हंस ने कौवे को अपने समीप आया देख उसे सादर बैठाया और कुशल छेम पूछा। कौवा तो स्वभाव से ही दुष्ट था, हंस को छाया किये देख कर वह मन ही मन सोचने लगा कि यदि मैं इस यात्री के ऊपर बीट करके उड़ जाऊँ तो यह यात्री जाग जायेगा तथा पंख फैलाए हंस को ही बीट करने वाला समझ कर मार डालेगा, इससे मैं इस हंस से मुक्ति पा जाऊँगा। जब तक यह हंस यहाँ रहेगा, तब तक सब इसी की प्रशंसा करते रहेंगे। यह विचार कर उस ईर्ष्यालु कौवे ने सोए हुए पथिक के मुँह में बीट कर दी और उड़ा गया। मुख में बीट गिरते ही यात्री चौक कर उठ बैठा। जब उसने ऊपर की ओर देखा हो हंस को पंख फैलाए बैठा पाया। यद्यपि हंस ने उसका उपकार किया था, परन्तु दुष्ट के क्षणिक संग ने उसे ही दोषी बना दिया। यात्री ने सोचा कि इस हंस ने ही मेरे मुँह में बीट की है, यात्री को गुस्सा तो था ही उसने धनुष-बाण उठाया और एक ही तीर से हंस का काम तमाम कर दिया। बेचारा हंस दुष्ट कौवे के क्षणिक संग के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ। इसलिए कहा गया है कि दुष्ट के साथ न तो कभी बैठना चाहिए और ना हीं कभी साथ देना चाहिए।

## गुरु गोविन्द सिंह के 350वें जन्मदिन पर विशेष

बालक गोविन्द राय का जन्म पिता गुरु तेग बहादुर ओर माता गुजरीबाई के परिवार में 1666 ई. पटना में हुआ था। उनकी महानता और समदृष्टि को उजागर करने वाले भीखन शाह दरवेश थे। जब दरवेश गोविन्द राय को आशीर्वाद और बधाई देने के लिए पटना में बालक के सामने आये तो वे हिन्दू और मुस्लिम भाईचारा का प्रतिनिधित्व करते थे। वे एक समान प्याले में दूध और पानी लेकर आये। बालक गोविन्द राय ने सहर्ष दोनों प्यालों को एक साथ अपने हाथों से स्पर्श किया। तो दरवेश ने भविष्यवाणी की। यह बालक बड़ा होकर हिन्दूओं और मुसलमानों से एक समान व्यवहार करेगा। इतिहास गवाह है कि समय आने पर गुरु जी ने ऐसा ही किया। यही कारण है कि सही और सकारात्मक बुद्धि वाले लोगों ने उनके मिशन का सदैव साथ दिया। **-जे.एस.नागपाल**, अमृतसर

# ॥ श्रद्धांजलि ॥

**2 मई, 2016** – राष्ट्र समर्पित जीवन के धनी स्वर्गीय बलराज मधोक जी ने आज संसार से विदा ली। 96 वर्ष से देश की सेवा में रत एक कर्म योगी आज हम सबको अकेला छोड़ कर चला गया। वह एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, कर्मनिष्ठ, चिन्तक, विचारक, राष्ट्रभक्त थे। परिषद् के संस्थापक श्री बलराज मधोक जी दो बार लोकसभा के सदस्य रहे। वे गणमान्य शिक्षाविद, विचारक, इतिहासवेत्ता, लेखक एवं राजनैतिक विश्लेषक भी थे। उन्होंने बहुत से आयाम स्थापित किये जिसमें विद्यार्थी परिषद्, भारतीय जन संघ, भारत विकास परिषद् आदि। वह अधिक समय तक भारत विकास परिषद् के निकट रहे।

भारत विकास परिषद् तथा श्री मधोक जी, दोनो एक दूसरे के पूरक थे। वे परिषद् की ज्योति को पूरे देश में प्रज्जवलित करने में सहायक रहे।

आज श्री मधोक जी भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं उनकी यादें कर्म और आत्मा हमे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी क्योंकि हमने एक महान कर्मयोगी, देशभक्त, पथ प्रदर्शक तथा समाज का हितैषी खोया है। उनके बारे में जितना भी कहा जाए कम होगा।

भगवान ने जब सृष्टि का निर्माण किया तो इस संसार को चलाने के लिए बहुत सारे नियम बनायें जिसमें से एक अटल नियम यह है कि जो भी प्राणी इस संसार में जन्म लेता है उसे इस संसार को छोड़ कर अवश्य जाना होता है। इसी अटल नियम के अनुसार ऐसे स्नेही और कर्मयोगी श्री मधोक जी इस संसार को छोड़कर प्रभु के धाम चले गये।

परिषद् परिवार इस दु:ख की घड़ी में अन्तरहृदय से सहानुभूति प्रकट करते हुए परम पिता परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना करता है कि भगवान दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

## भारत विकास परिषद् परिवार द्वारा हार्दिक संवेदना

1. **नंगल, पंजाब पूर्व :** शाखा की संस्थापक एवं संरक्षक संस्थापक एवं संरक्षक श्रीमती कृष्णा वर्मा का 7 अप्रैल, 2016 को निधन हो गया।
2. **स्वर्णिम-वाराणसी, काशी प्रदेश :** शाखा सदस्य श्री शिवशंकर राय का 72 वर्ष की आयु में 29 मार्च, 2016 को निधन हो गया।
3. **क्लेमेंट टाउन, उत्तरखण्ड पश्चिम :** शाखा के काषाध्यक्ष श्री गोपाल कृष्ण मैन्दोला के पिता जी श्री नारायण प्रसाद मैन्दोला एवं वरिष्ठ सदस्य एस.डी. ढ़ींगरा की पत्नी श्रीमती राधा देवी का निधन हो गया।
4. **मुजफ्फरनगर 'मंजरी', हस्तिनापुर :** प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं शाखा सदस्य श्री सुधीर गर्ग के भ्राता श्री सुरेन्द्र प्रकाश अग्रवाल का 8 मार्च, 2016 को निधन हो गया।
5. **बहराइच, अवध प्रदेश :** शाखा के पूर्व अध्यक्ष सुशील ड्रोलिया के पिता जी व वरिष्ठ समाज सेवी श्री द्वारिका प्रसाद ड्रोलिया का 95 वर्ष की आयु में एवं पूर्व कोषाध्यक्ष श्री हनुमान गोयल के चाचा जी श्री मेवा लाल गोयल का 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
6. **कन्नौज, ब्रह्मावर्त :** रीजनल सचिव (उत्तर मध्य) श्री शशि भूषण गुप्ता की माता जी का 28 अप्रैल, 2016 को निधन हो गया है।
7. **Mahadev Reasi (J&K) :** Shri Chhajju Ram Dubey Father of Shri Braham Dutt Dubey, left for his heavenly abode on 28 Feb, 2016 at the age of 85.

**परिषद् परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि**